वार्षिक 300/- रूपए
website : www.vhp.org

मूल्य 15 रूपए
कुल पृष्ठ - 28

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

हिन्दू विश्व

जुलाई 16-31, 2025

शिवभक्ति का ज्वार

विघ्नों के बीच भी बढ़ती जा रही कांवड़ यात्रा

प्रकृति के सम्मान का उत्सव

गौ-संरक्षण एवं संवर्धन के लिए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अभिनव पहल

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

प्रदेशभर की गौ-शालाओं में गोवर्धन पर्व का सामुदायिक आयोजन

प्रगति और पर्यावरण के प्रति सजगता की मिसाल बनता मध्यप्रदेश

- प्रदेश में संचालित 1,500 से अधिक गौ-शालाओं में 3.30 लाख गौ-वंश का पालन। शीघ्र ही लगभग 2,500 नई गौ-शालाएं प्रारंभ होंगी जिनमें 4.50 लाख गौ-वंश का पालन हो सकेगा।
- गौ-वंश के बेहतर आहार हेतु प्रति गौ-वंश 20 रुपये की राशि बढ़ाकर 40 रुपये की जा रही है।
- दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिए मध्यप्रदेश सरकार और राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के बीच एमओयू। आगामी 5 वर्ष में लगभग 12,000 दुग्ध समितियां 25 लाख लीटर दूध एकत्रित करेंगी।
- देश में सर्वाधिक 15 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में जैविक खेती करने वाले मध्यप्रदेश में गौ-वंश को प्रोत्साहन देने की पहल से जैविक खेती उत्पादन बढ़ेगा।
- दुग्ध उत्पादन और ग्रामीण आजीविका को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हर ब्लॉक में एक 'वृंदावन ग्राम' बनेगा।
- गौ-शालाओं का बजट 150करोड़ से बढ़ाकर 250 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष एवं मुख्यमंत्री पशुपालन विकास योजना में 195 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।
- ग्वालियर स्थित आदर्श गौ-शाला में देश के पहले 100 टन क्षमता वाले CNG प्लांट की स्थापना।

RO NO. - D16044/25

हिन्दू विश्व

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

16 से 31 जुलाई, 2025
श्रावण कृष्ण - शुक्ल पक्ष
पिंगल संवत्सर
वि. सं. - 2082, युगाब्द- 5127

सम्पादक
विजय शंकर तिवारी

सह सम्पादक
मुरारी शरण शुक्ल
मो. - 7217685539

परामर्शदाता
सर्वश्री राजेन्द्र शर्मा,
विजय कुमार,
रवि पराशर

व्यवस्थापक
श्री दूधनाथ शुक्ल
मो. - 09582555152

सज्जा
श्री महेश कुशवाहा

कार्यालय :
'हिन्दू विश्व'
संकटमोचन आश्रम, प्रभाग - 6
रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली-110022-05
दूरभाष : 09582555152

011-26178992, 011-26103495
hinduvishwa@gmail.com

- : मूल्य :-

विदेशों के लिए वार्षिक डाक व्यय सहित	$ 75 USD
एक प्रति	15/-
वार्षिक	300/-
त्रिवर्षीय	750/-
पंचवर्षीय	1,200/-
दसवर्षीय	2,250/-
पन्द्रह वर्षीय	3,100/-

पत्रिका की सदस्यता हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें, उसका स्क्रीन शॉट और अपना पता व्यवस्थापक को 9582555152 नम्बर पर भेजें।

वैधानिक सूचना

- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।

कुल पेज - 28

संसार के अनिष्ट-निवारण के लिए (यज्ञार्थ) अग्नि की स्तुति करते हैं। (प्रथम परिधि) आप याजकों की सुरक्षा करने वाली हैं, विश्वावसु गंधर्व आपको चारों ओर से सँभालें। (दूसरी परिधि) आप याजकों की रक्षक, इन्द्रदेव की दाहिनी भुजा हैं। (तीसरी परिधि) हे यजमानों की रक्षक! मित्रावरुण (सूर्य एवं वायु) धर्मपूर्वक उत्तम साधनों से आपको धारण करें।

- यजुर्वेद

विहिप द्वारा आयोजित सर्व हिंदू समाज प्रतिभा सम्मान	07
वैश्विक स्तर पर भारत के विरुद्ध पुनः गढ़े जा रहे झूठे विमर्श	08
बंगाल में प्रसाद का ठेका जिहादी थूक-थूक गैंग को..!	10
10 लोगों को ईसाई बनाओ और सैलेरी पाओ... धर्मान्तरण को लेकर राजस्थान में यह कैसा खेल?	12
केरल में भारत माता का अपमान	17
कांवड़ यात्रा पर जिहादी हमले और उनके पैरोकार	19
मानसून डाइट	21
11वां अंतर्राष्ट्रीय दिवस हिंदू हेरिटेज सेंटर रोटोरुआ में मनाया गया	22
अखिल भारतीय सेवा बैठक-भाग्यनगर	23
हिंदुत्व के प्रभाव से भारत नवोत्थान की ओर, अब धर्मांतरण पर पूर्ण विराम व मंदिरों को सरकारी नियंत्रण से मुक्ति की ओर समाज : विहिप	26

सुभाषित

दानेन तुल्यो विधिरास्ति नान्यो लोभोच नान्योस्ति रिपुः पृथिव्यां।
विभूषणं शीलसमं च नान्यत् सन्तोषतुल्यं धमस्ति नान्य।।

दान के समान अन्य कोई अच्छा कर्म नहीं है, लोभ के समान इस पृथ्वी पर कोई अन्य शत्रु नहीं है, शील के समान कोई गहना नहीं है और सन्तोष के समान कोई धन नहीं है।

सम्पादकीय

विजय शंकर तिवारी

जातिवाद की राजनीति बनाम गजवा-ए-हिन्द की सच्चाई

मोतिहारी, बिहार–जहाँ मुहर्रम के जुलूस में 22 वर्षीय अजय यादव को पीट– पीट कर मौत के घाट उतार दिया गया। देश भर में मुहर्रम की आड़ में इस्लामिक दंगाइयों के द्वारा अनेकों घटनाएँ हुए हैं। ये कोई साधारण आपराधिक घटनाएँ नहीं हैं, बल्कि गहरी वैचारिक और सामाजिक चेतावनी हैं, विशेषकर उस हिंदू समाज के लिए, जिसे दशकों से जातियों में बाँटकर राजनीतिक स्वार्थ साधे जा रहे हैं।

जिस यादव समाज को राजनीतिक दलों ने 'MY समीकरण' (मुस्लिम + यादव) के नाम पर दशकों से भ्रमित किया, उसी यादव समाज के बेटे को इस्लामी जुलूस में निर्ममता से मार दिया गया और दुखद यह है कि वही जातिवादी नेता, जिनका नाम इस समीकरण में आता है, मौन हैं। न लालू यादव ने एक शब्द कहा, न तेजस्वी यादव ने कोई संवेदना प्रकट की और न अखिलेश यादव ने कोई सवाल उठाया।

ऐसी घटनाओं में जब हिंदू समाज के अंदर कोई घटना घटी है, तो एक पूरी राजनीतिक मशीनरी जाग उठती है प्रेस कॉन्फ्रेंस, सड़क पर प्रदर्शन, ट्विटर पर आक्रोश और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की छवि को धूमिल करने के षड्यंत्र तक रचे जाते हैं और जब अजय यादव जैसे हिंदू युवक को एक इस्लामी जुलूस में पीट–पीट कर मारा जाता है, तो वही नेता 'सेक्युलरिज़्म' की आड़ में चुप्पी साध लेते हैं। क्या यह इसलिए कि अपराधी मुस्लिम समुदाय से आते हैं? क्या हिंदू जीवन का मूल्य अब राजनीतिक गणनाओं में नगण्य हो गया है? या फिर सच्चाई यह है कि तथाकथित MY समीकरण एकतरफा समर्पण है, लक्ष्य किसी और की विचारधारा को बढ़ावा देना होता है?

"गज़वा–ए–हिन्द" कोई फैंटेसी या सोशल मीडिया की थ्योरी नहीं है, यह एक घोषित इस्लामी एजेंडा है, जिसमें भारत को एक दिन इस्लामी राष्ट्र बनाने का सपना पाला जा रहा है। इस एजेंडे में किसी जाति विशेष को नहीं, बल्कि समस्त "ग़ैर–मुस्लिमों" को काफ़िर समझा जाता है। हिंदू त्योहारों और यात्राओं पर हमले करना हो या कांवड़ यात्राओं पर थूकने जैसी घटनाएँ हों, ये सब इनके इस्लामिक वर्चस्व को स्थापित करने की योजनाओं का हिस्सा है। हिंदू समाज को इन्हें कठोरता से प्रत्युत्तर देना चाहिए, जो आज की बड़ी आवश्यकता है।

भारत में जातिवाद का जहर सबसे गहरा तब फैला, जब वोटबैंक की राजनीति ने 'हिंदू' की समष्टि को तोड़कर उसे जातियों में बाँट दिया। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, सबको एक–दूसरे का विरोधी बताया गया। मुसलमान एकजुट रहे, 'उम्मा' की भावना से प्रेरित होकर संगठित रहे, जबकि हिंदू समाज जातियों के नाम पर आपस में उलझता रहा। आज मोतिहारी की घटना हमें उस विभाजनकारी राजनीति का क्रूर चेहरा दिखाती है। हिंदुओं पर जब हमला होता है, तो वह किसी जाति विशेष पर नहीं, संपूर्ण हिंदू अस्तित्व पर होता है।

मुस्लिमों के द्वारा हो रही हत्याएँ केवल हत्याएँ नहीं हैं, बल्कि सामाजिक चुनौतियाँ हैं। क्या हिंदू समाज अब भी जातिवादी नेताओं के बहकावे में रहेगा? क्या अब वह समझेगा कि हिंदू की पहचान जाति नहीं, उसका धर्म और संस्कृति है और उस पर ही सबसे बड़ा आघात हो रहा है? हमें याद रखना चाहिए जब इस्लामी आक्रांताओं ने भारत पर आक्रमण किया, तो उन्होंने कभी नहीं देखा कि वह ब्राह्मण के गाँव में आ रहे हैं, या, यादवों की बस्ती में। उनके लिए सब 'हिंदू' थे और इसलिए सबको मारा गया, मंदिर तोड़े गए, हजारों वर्षों की संस्कृति को रौंदा गया। आज वही सोच नए रूप में, नए आवरण में फिर से सक्रिय है कभी 'जुलूस' के नाम पर, कभी 'त्योहार' की आड़ में और कभी 'सेक्युलरिज्म' की ढाल में। हिंदू समाज को अब जातीय राजनीति के दायरे से निकलकर अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए एकजुट होना होगा। हिंदुओं पर लगातार हो रहे आघात हिंदू विचारों पर अपघात है। अब समय आ गया है कि हम गज़वा–ए–हिन्द की चुनौती को समझें, जातियों से ऊपर उठें और संगठित होकर उन शक्तियों का प्रतिकार करें, जो हमारी संस्कृति, हमारी आस्था और हमारे अस्तित्व को मिटाने का सपना देख रही हैं।

मौन रहना अब अपराध है।

जागना ही एकमात्र विकल्प है।

अब न साथ आए, तो इतिहास क्षमा नहीं करेगा।

मुस्लिमों के द्वारा हो रही हत्याएँ केवल हत्याएँ नहीं हैं, बल्कि सामाजिक चुनौतियाँ हैं। क्या हिंदू समाज अब भी जातिवादी नेताओं के बहकावे में रहेगा? क्या अब वह समझेगा कि हिंदू की पहचान जाति नहीं, उसका धर्म और संस्कृति है और उस पर ही सबसे बड़ा आघात हो रहा है? हमें याद रखना चाहिए जब इस्लामी आक्रांताओं ने भारत पर आक्रमण किया, तो उन्होंने कभी नहीं देखा कि वह ब्राह्मण के गाँव में आ रहे हैं, या, यादवों की बस्ती में। उनके लिए सब 'हिंदू' थे और इसलिए सबको मारा गया, मंदिर तोड़े गए, हजारों वर्षों की संस्कृति को रौंदा गया।

शिवो भूत्वा शिवम् यजेत्
शिव बनकर शिव की पूजा करें

मुरारी शरण शुक्ल

सह सम्पादक हिन्दू विश्व

जलाभिषेक की परम्परा बहुत प्राचीन है। दुग्धाभिषेक, रसाभिषेक, गन्धलेपन, औषधोपचार, पंचोपचार, षोडशोपचार की विधियाँ भी अति प्राचीन हैं। ज्योतिर्लिंगों पर रूद्राभिषेक होते ही हैं, सभी शिव मंदिरों में रुद्राभिषेक की परम्परा है। शिव जी पर जल चढ़ाना तो बहुत समान्य बात है। पर्वों के अवसर पर, सोमवार को अधिक सँख्या में शिवलिंग पर जल चढ़ाने जाते हैं लोग। अपने घरों में भी समस्या निवारण की दृष्टि से शिववास की तिथि में रुद्राभिषेक करने की परम्परा है। अनेक लोग ऐसे भी हैं, जो नित्य प्रति जलाभिषेक और दुग्धाभिषेक करते हैं। श्रावण के महीने में ज्योतिर्लिंगों पर, शिव मंदिरों में गंगाजल से अभिषेक करने की प्राचीन परम्परा है। बहुत क्षेत्रों में केवल शुक्ल पक्ष में कांवड़ यात्रा होती है, तो कई स्थानों पर पूरे माह की कांवड़ यात्रा होती है।

श्रावण में शिवपूजन

श्रावण माह शिवपूजन के लिए बहुत ही उत्तम माह माना जाता है। सावन मास में भगवान शंकर द्वारा आदिशक्ति जगदम्बा पार्वती को सुनाई गई अमर कथा के श्रवण से अमरत्व प्राप्ति के साथ–साथ पापों से मुक्ति मिल जाती है। शास्त्रानुसार ऋषि मार्कण्डेय ने चिर आयु प्राप्ति के लिए शिव सिद्धि हेतु श्रावण मास में अनुष्ठान किया, जिसके फलस्वरूप मृत्यु के देव यमराज ऋषि मार्कण्डेय से पराजित हुए। सावन मास शिव उपासना हेतु विशिष्ट माना गया है। शास्त्रानुसार श्रावण में विधिवत शिव पूजन से अभीष्ट फलों की प्राप्ति होती है। मान्यता है कि श्रावण मास में शिव जी संसार को सम्भालते हैं। श्रावण मास में ही पार्वती जी ने शिव जी को प्राप्त करने के लिए सोमवार का व्रत आरम्भ किया था। इसीलिए श्रावण माह भगवान शिव को बहुत ही प्रिय है।

कांवड़ यात्रा का आरम्भ किया श्रीराम ने

समुद्रमंथन से विष निकला, विष शिवजी ने पी लिया, गले में धारण कर लिया, कंठ नीला हो गया विष के प्रभाव से, तो नीलकंठ कहलाए। लेकिन विष का कुप्रभाव दाहकता उत्पन्न करने लगा, परिवेश को प्रभावित करने लगा, तो रावण ने कांवड़ उठाया, गंगाजल भरकर लाया और शिवजी का अभिषेक किया, उससे विष का शमन हुआ और शांति हुई। इससे शिवजी को विष की पीड़ा से राहत मिली। रावण को भगवान शिव का पहला कांवड़िया माना जाता है। तब से यह कांवड़ यात्रा आरम्भ हुई और यह कांवड़ यात्रा अबतक शिवजी के प्रति भक्तिभाव का प्रतिक बना हुआ है।

श्रावण में कांवड़ यात्रा

शिवजी को शांत रखने के लिए, कल्याणकारी बनाए रखने के लिए गंगाजल से उनका अभिषेक बहुत प्रभावकारी होता है। शिवजी की जटा से निकली गंगा का जल शिवजी को अर्पित करने से शिव अतिशय प्रसन्न होते हैं। सावन के महीने में उनका गंगाजल से अभिषेक करने से भक्तों को विशेष फल प्राप्त होता है। शिव जी शांत होते हैं तथा जगत का कल्याण होता है।

कांवड़ यात्रा का महत्व

कांवड़ यात्रा करने से शिवजी अति प्रसन्न होते हैं और भक्त को रोग, भय,

शोक और दरिद्रता से मुक्त करते हैं। गंगा जल लाकर शिवलिंग का अभिषेक करना अत्यंत पुण्यकारी माना जाता है। यह यात्रा व्यक्ति के पापों का नाश करती है और उसे मोक्ष की ओर अग्रसर करती है। सावन माह भगवान शिव को अति प्रिय है। इस माह में शिव जी की पूजा विशेष फलदायी मानी जाती है और कांवड़ यात्रा इस भक्ति का चरम रूप है।

कहाँ कहाँ होती है कांवड़ यात्रा

देश भर में बहुत स्थानों पर होती है कांवड़ यात्रा। छोटे–बड़े कई स्तरों पर अनेक स्थानों पर आयोजित होती है यह कांवड़ यात्रा। बिहार, उत्तरप्रदेश, उत्तराखण्ड, मध्यप्रदेश इत्यादि अनेक राज्यों में अनेक स्थानों पर भव्य कांवड़ यात्रा आयोजित होती है। मध्यप्रदेश में नर्मदा नदी से जल उठाकर अपने गाँव के शिवमंदिर में जल ले जाते हैं और अभिषेक करते हैं। उत्तरप्रदेश और उत्तराखंड में गंगा नदी से जल उठाते हैं और अपने–अपने गाँव के शिव मंदिर में गंगाजल से जलाभिषेक किया जाता है। जल भी कई स्थानों से उठाया जाता है– यथा– हरिद्वार, ऋषिकेश और गंगोत्री इत्यादि। बिहार, झारखण्ड में सुल्तानगंज से जल उठाते हैं और 105 किलोमीटर की यात्रा करके देवघर के ज्योतिर्लिंग और इसका पूरक शिवलिंग माने जाने वाले वासुकीनाथ पर गंगाजल से अभिषेक किया जाता है। सुल्तानगंज जिसका नाम बदलने की आवश्यकता है, वहाँ गंगा उत्तर वाहिनी है और वहाँ अजगैबीनाथ महादेव का मन्दिर है। यहीं से कांवड़ यात्रा करने वाले श्रद्धालु गंगा जल उठाते हैं।

डांक कांवड़

कुछ यात्री डांक कांवड़ उठाते हैं। इनका पंजीयन होता है। इनके वस्त्र पर डांक कांवड़ लिखा होता है। इनको विशेष मार्ग देना होता है। मार्ग में रुकने से या मल–मूत्र विसर्जन करने से और चौबीस घंटों के अंदर जल न चढ़ाने से इनका व्रत भंग हो जाता है। इनको देवघर के मंदिर में अलग पंक्ति से प्रवेश मिलता है। ऐसे डांक कांवड़ यात्रा का चलन अन्य स्थानों और क्षेत्रों में भी है।

चार तरह की होती है कांवड़ यात्रा

1.सामान्य कांवड़ यात्रा – इसमें आराम से अपनी क्षमता और स्थिति अनुसार यात्रा की जाती है। इसकी कोई समयावधि तय नहीं होती है।

2.खड़ी कांवड़ यात्रा – इस यात्रा में संकल्प लिया जाता है कि जल उठाने के बाद से लेकर जल चढ़ाने तक लगातार खड़ा ही रहना है। बैठना या सोना नही है।

3.दांडी कांवड़ यात्रा – यह यात्रा दंडवत देते हुए पूरी की जाती है। कांवड़ का जल साथ का यात्री लेकर चलता है और स्वयं दंडवत देते हुए अपने शरीर से पूरे यात्रा मार्ग को नापना होता है।

4.डांक कांवड़ यात्रा – दौड़ते हुए या चलते हुए 24 घंटों के अंदर यात्रा पूर्ण करना होता है।

दस करोड़ से अधिक कांवड़ यात्री

पूरे देश में लगभग दस करोड़ से अधिक कांवड़ यात्री पवित्र नदियों के जल उठाकर करते हैं शिवजी का अभिषेक। पूरे श्रावण मास में देशभर में शिवभक्ति मय वातावरण बन जाता है। जहाँ देखो वहीं बम बम भोले, जय भोले, बोल बम–बोल बम, बोल कांवड़िया बोलो बम, भारत माता की जय, ये नारे सब जगह सुनाई पड़ते हैं।

सावन में नशा और मांस का निषेध

सावन में बिगड़े हुए नशेड़ी भी नशा छोड़ देते हैं। मांसाहार बंद कर देते हैं। लहसुन और प्याज नहीं खाते लोग। शुद्ध सात्विक भोजन करते हैं। भक्तिपूर्ण जीवन जीते हैं। सावन में छल–प्रपंच से भी परहेज करते हैं और सहज और सधा हुआ जीवन का व्रत लेते हैं। मिथ्या और कटु भाषण न करने का भी व्रत लेते हैं।

अमरनाथ और कैलाश यात्रा भी

इसी समय में अमरनाथ यात्रा भी आयोजित होती है। बुढ़ा अमरनाथ यात्रा आयोजित होती है। अभी ही कैलाश मानसरोवर यात्रा का भी आयोजन होता है। देश भर के ज्योतिर्लिंगों पर भीड़ उमड़ रही होती है। भगवान शिव की अप्रतिम भक्ति उनके कल्याणकारी गुणों को ग्रहण करने और आत्मसात करने के हेतु से की जाती है।

गेरुआ वस्त्र धारण करता है समाज

इस पुरे माह में सामान्य जन और गृहस्थ भी सन्यासियों का रंग कोपिन अर्थात् भगवा रंग धारण करते हैं। अनेक लोग पदवेश धारण नहीं करते, जूते–चप्पल नहीं पहनते। पूरे माह खाली पैर चलते हैं। पहले गाँवों में सड़कें होती नहीं थी, गलियों में कीचड़ होता था, तो लोग वैसे ही जूते–चप्पल पहन नहीं पाते थे, किन्तु इसमें भक्ति की परम्परा भी समाहित है। देवघर की कांवड़ यात्रा में लोग घर से ही खाली पैर निकलते हैं। वैसे तो सभी तीर्थयात्रा नंगे पांव ही करने का विधान था प्राचीनकाल में।

क्यों चढ़ाया जाता है जल?
जल चिकित्सक हैं रुद्र।

रुद्र को जल द्वारा चिकित्सा करने वाला तथा नीलवर्ण की शिखा वाला बताया गया है। (रुद्र जलाषभेषज नीलशिखण्ड कर्मकृत। प्राशं प्रतिप्राशो जह्यरसान्

कृण्वोषधे। अथर्ववेद. 2/27/6।।) यहाँ नीलवर्ण से नीलकण्ठ स्वरुप का संकेत प्रतित होता है। नीलवर्ण से जल जनित विष का संकेत भी होता है। प्राश–प्रतिपाश से डॉट और एण्टी डॉट का भी संकेत है, जो विष चिकित्सा में विचारणीय होता है। रुद्र सृष्टि आदि (सृष्टि, स्थिति, संहार, प्रलय तथा अनुग्रह) पंच कृत्यों को संपन्न करने वाले हैं। आप हमारे द्वारा सेवन की जाने वाली इस ओषधि को, प्रतिपक्षियों को परास्त करने में समर्थ करें। हे ओषधे! आप हमारे द्वारा प्रश्न (प्राशन–ग्रहण) करने पर प्रतिवादियों (प्रतिप्राश ग्रहण न करने वाले) को पराशत करें तथा उनके कण्ठ को नीरस करके उन्हें बोलने में असमर्थ करें। रुद्र की इस जल चिकित्सक गुणवत्ता के कारण उनको जल अर्पित करके आरोग्य और समस्या निवारण की कामना की जाती है।

पुरुष व प्रकृति का रहस्य

रुद्रस्य ये मीळहुषः सन्ति पुत्रा
यांश्चो नु दाधृविर्भरध्यै।
विदेहि माता महो मही षा
सेत्पृश्निः सुभ्वे३ गर्भमाधात्।।
ऋग्वेद (6/ 66/3)

अंतरिक्ष में रहने वाले मरुद्गणों के पिता रुद्र और माता महामहिमामयी पृथ्वी हैं। ये पृथ्वी ही सबके कल्याण के लिए जल, अन्न को अपने गर्भ में धारण करती हैं। मरुद्गणों के पिता रुद्र से यह स्पष्ट है कि मरुद्गण वो शक्तियाँ हैं, जिनकी सहायता इन्द्र खगोलिय पीण्डों को स्थिर करने में लेते हैं। सृष्टी रचना में इनका उपयोग होता है। तेजस तत्व के वाहक भी मरूत हैं। जिस उर्जा के अंतरण से जल बादल में परिणत हो जाता है और बादल जल बिन्दुओं में परिणत हो जाता है, उर्जा के उस परिमाण का नाम मरूत है। ये वृष्टि के कारक होने से कल्याणकारी हैं, क्योंकि इनके जनक रुद्र हैं। इस प्रकार वर्षा जल के कारक रुद्र हैं और उनकी ही कृपा से वर्षा का चक्र संचालित होता है। इसीलिए वर्षा का अधिपति माह सावन के देवता और संचालक शिव कहलाते हैं।

लोक निर्माता महादेव रुद्र

यजुर्वेद (11/54–55) में उन्हें रुद्रदेवों के रुप में बहुसँख्यक कहा गया है और उन्हें भूलोक का सृजनकर्ता बताया गया है। यह भी कहा गया है महान तेजस्वितायुक्त सूर्यदेव से रुद्रदेवों ने भूलोक को प्रकाशित किया है। अर्थात सूर्यदेव के सृजनकर्ता भी रुद्रगण ही है। यह भी कहा गया है कि रुद्रदेवों की पवित्र–प्रचंड ज्योति ही अन्य देवशक्तियों के अस्तित्व की परिचायक है।

कौन कर सकता है शिवपूजन?

न मे प्रियष्चतुर्वेदी मद्भभक्तः ष्वपचोऽपि यः।
तस्मै देयं ततो ग्राह्यं स च पूज्यो यथा ह्यहम्।।

शिवजी कहते हैं कि मेरा भक्त किसी भी जाति का हो, कोई भी व्यवसाय करता हो, उसका आर्थिक व सामाजिक स्तर कुछ भी हो, यदि उसकी मेरे प्रति भक्ति हो, तो मैं उसकी पूजा स्वीकार करता हूँ।

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति।
तस्याहं न प्रणस्यामि स च मे न प्रणस्यति।।

जो भक्तिभाव से बिना किसी वेद मंत्र के उच्चारण किए मात्र पत्र, पुष्प, फल अथवा जल समर्पित करता है उसके लिए मैं अदृश्य नहीं होता हूँ और वह भी मेरी दृष्टि से कभी ओझल नहीं होता है।

शिव जगत के कल्याण के सूत्रधार हैं। शिव ही कल्याण के हेतु हैं। शिवत्व का वैदिक अर्थ ही है कल्याणकारी। वह सभी सद्‌गुण जिनसे व्यापक समष्टिगत कल्याण सुनिश्चित होता है, शिव कहलाते हैं। यदि आप गुणवान बनते हैं, आपका गुण और ज्ञान समाज के लिए कल्याणकारी होने लगता है, आपके कारण जगत का हित सिद्ध होता है, तो आप शिवत्व से सम्पन्न होने लगते हैं। ऐसा गुणवान होने के पश्चात ही आप शिवपूजन के अधिकारी हो जाते हैं। इसी को शास्त्रों ने कहा है शिवो भूत्वा शिवम् यजेत्। शिव बनकर शिव की पूजा करें।

murari.shukla@gmail.com

विहिप द्वारा आयोजित सर्व हिंदू समाज प्रतिभा सम्मान

अशोकनगर, 28 जून। विश्व हिंदू परिषद ने हिंदू समाज प्रतिभा सम्मान कार्यक्रम में 38 समाजों से 242 प्रतिभाओं का सम्मान तथा सभी के उज्जवल भविष्य की कामना की। विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल द्वारा आहवान किया गया कि युवा राष्ट्रहित में चिंतन करें और बजरंग दल से जुड़ें।

बजरंग दल प्रांत संयोजक अवधेश तिवारी द्वारा राष्ट्र रक्षा का संकल्प दिलवाते हुए कहा गया कि आज हमारे देश के युवाओं को भड़काया जा रहा है, नकारात्मक वातावरण बनाकर युवाओं को भ्रमित किया जाता है। नशा से दूर रहना चाहिए, स्वयं के भविष्य को उज्जवल बनाने के साथ राष्ट्र का चिंतन करते हुए देश, धर्म के लिए भी हमें कुछ करना होगा। युवा भाई, बहन जब योगदान देंगे तभी हमारा देश विश्व गुरु बनेगा।

विहिप प्रांत धर्म प्रसार प्रमुख दीपक मिश्रा ने कहा कि आज हिंदू समाज को जातियों में बांटने का प्रयास चल रहा है, उसको हमें सफल नहीं होने देना है। धर्मों रक्षति रक्षितः हम धर्म की रक्षा करेंगे, तब धर्म हमारी रक्षा करेगा। हिंदू समाज सनातन हिंदू धर्म ही है, इसमें प्राणियों में सद्भावना और विश्व के कल्याण के विचार को माना जाता है। आज हमारे देश में आसुरी राष्ट्र विरोधी शक्तियाँ हमारे समाज में नकारात्मक वातावरण पैदा कर रही हैं, जिससे समाज का विभाजन हो और हिंदू धर्म का क्षय हो। विश्व हिंदू परिषद हिंदू समाज के मानबिंदुओं के लिए कार्य कर रहा है। आज समाज के युवाओं को विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल से जुड़ कर राष्ट्र समाज हेतु कार्य करना चाहिए। भारत माता की रक्षा के लिए देश विरोधी शक्ति को पहचानने, आसुरी शक्तियों का विरोध करने के लिए खड़ा होना पड़ेगा, तभी भारत विश्व गुरु बनेगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता नामदेव समाज के प्रदेश अध्यक्ष अरुण नामदेव ने की। संचालन जिला सह मंत्री संतोष शर्मा द्वारा किया गया।

वैश्विक स्तर पर भारत के विरुद्ध पुनः गढ़े जा रहे झूठे विमर्श

प्रहलाद सबनानी

वैश्विक स्तर पर आर्थिक जगत में भारत का उदय कुछ देशों को रास नहीं आ रहा है। विकसित देशों के बीच पूरे विश्व में भारत आज सबसे तेज गति से आगे बढ़ती अर्थव्यवस्था बना हुआ है। जापान, ब्रिटेन, फ्रांस, इटली आदि देशों से आगे निकलते हुए भारत आज विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है और शीघ्र ही लगभग एक वर्ष के बाद जर्मनी को पीछे छोड़ते हुए भारत के विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की संभावनाएँ भी अब स्पष्टतः दिखाई दे रही हैं। भारत एक ओर अति आधुनिक तकनीकि के आर्टिफिशियल इंटेलिजेन्स एवं डाटा सेंटर जैसे क्षेत्रों में पूरे विश्व का नेतृत्व करता हुआ दिखाई दे रहा है, तो दूसरी ओर वित्तीय क्षेत्र में ऑनलाइन व्यवहारों के मामले में भी भारत आज कई देशों का मार्गदर्शन करता हुआ दिखाई दे रहा है। कुल मिलाकर भारत आज लगभग प्रत्येक क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनते हुए विश्व के अन्य देशों पर अपनी निर्भरता को कम करता जा रहा है। भारत के विकास की यह गति एवं राह कुछ देशों को बिलकुल उचित नहीं लग रही है एवं वे वैमनस्य का भाव पालते हुए भारत के विरुद्ध एक बार पुनः कुछ झूठे विमर्श गढ़ने का प्रयास कर रहे हैं।

हाल ही में अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) द्वारा जारी की गई एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद 2,730 अमेरिकी डॉलर के स्तर पर पहुँच गया है, जबकि बाँग्लादेश में प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद 2,870 अमेरिकी डॉलर है। इस प्रकार भारत विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होने के बावजूद प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद के मामले में बाँग्लादेश जैसे छोटे देश से भी पीछे है। अतः यह झूठा विमर्श गढ़ने का प्रयास किया जा रहा है कि भारत में किस प्रकार का आर्थिक विकास हो रहा है, जिससे भारतीय नागरिकों की आय तो उतनी तेजी से नहीं बढ़ पा रही है, जिस तेजी से भारत का आर्थिक विकास होता हुआ दिखाई दे रहा है। आंकड़ों का उचित तरीके से विश्लेषण न करते हुए भारत के संदर्भ में गलत जानकारी देने का कुत्सित प्रयास किया जा रहा है। यहाँ यह स्पष्ट करना जरूरी है कि किसी भी मामले में तुलना दो आमों के बीच ही सम्भव है, आम एवं संतरे के बीच तुलना कैसे सम्भव है। भारत की जनसँख्या 140 करोड़ है, जबकि बाँग्लादेश की जनसँख्या केवल 17 करोड़ से कुछ ही अधिक है। भारत एक विशाल देश है, जिसमें 60 प्रतिशत से अधिक जनसँख्या आज भी गाँवों में निवास करती है। भारत में 28 राज्य एवं 8 केंद्र शासित प्रदेश हैं। बाँग्लादेश, भारत के सामने एक पिद्दी सा देश है। यदि तुलना करनी ही हो तो भारत की तुलना चीन से की जा सकती है। इसी प्रकार बाँग्लादेश की तुलना स्विट्जरलैंड, नीदरलैण्ड, स्वीडन आदि जैसे छोटे देशों से की जा सकती है। स्विट्जरलैंड में प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद 99,564 अमेरिकी डॉलर, नीदरलैण्ड में 64,572 अमेरिकी डॉलर एवं स्वीडन में 55,516 अमेरिकी डॉलर प्रति व्यक्ति है। ब्रिटेन ने जब भारत में अपनी सत्ता को छोड़ा था, अर्थात भारत ने वर्ष 1947 में जब राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त की थी, तब भारत की 70 प्रतिशत से अधिक आबादी गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रही थी, परंतु आज केवल 4 से 4.5 प्रतिशत भारतीय ही गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रहे हैं। जबकि बाँग्लादेश में लगभग 19 प्रतिशत नागरिक गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने को मजबूर हैं। भारत के सकल घरेलू उत्पाद का आकार आज 4.19 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर के आंकड़े को पार कर गया है, जबकि बाँग्लादेश के सकल घरेलू उत्पाद का आकार केवल लगभग 46,700 करोड़ अमेरिकी डॉलर का है। सकल घरेलू उत्पाद को देश की कुल जनसँख्या से बांट कर ही प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद के आंकड़े को प्राप्त किया जा सकता है। भारत की जनसँख्या 140 करोड़ से अधिक है, जबकि बाँग्लादेश की जनसँख्या मात्र 17 करोड़ है। इससे प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद का आंकड़ा बाँग्लादेश की तुलना में कुछ कम हो जाता है। भारत में पिछले कुछ वर्षों के दौरान बहुत संतुलित विकास हुआ है। भारत में न केवल धनाढ्यों की सँख्या में अपार वृद्धि दर्ज हुई है, बल्कि

गरीबी उन्मूलन पर भी पर्याप्त ध्यान दिया गया है, जिससे गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले नागरिकों की सँख्या में भी अतुलनीय कमी दर्ज हुई है।

बाँग्लादेश की तुलना में भारत एक विशाल देश है एवं भारत के कई राज्यों यथा महाराष्ट्र, गुजरात एवं तमिलनाडु आदि का प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद बाँग्लादेश की तुलना में दुगने से तिगुने आकार का है। इसी प्रकार भारत के कुछ राज्य अभी भी पिछड़े राज्यों की श्रेणी में शामिल है, जैसे बिहार, झारखंड आदि। परंतु किसी भी देश के प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद का औसत निकालते समय देश के समस्त राज्यों के आंकड़ों को शामिल करना होता है। इस कारण से भी भारत में प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद का औसत कुछ कम हो जाता है।

इन दिनों एक और कुतर्क दिया जा रहा है कि भारत में तेज गति से हो रही आर्थिक प्रगति के बीच भी बच्चों की जन्म–मृत्यु की दर अफ्रीकी देशों के समान बनी हुई है। इस प्रकार का झूठा विमर्श गढ़ते समय संभवतः वास्तविक स्थिति की ओर ध्यान ही नहीं दिया गया है। रजिस्ट्रार जनरल ऑफ इंडिया की एसआरएस रिपोर्ट के अनुसार भारत में 1,000 शिशुओं के जन्म के बीच शिशुओं की जन्म–मृत्यु दर केवल 26 है, जबकि अफ्रीकी देशों यथा नाईजीरिया में 67, कांगो में 62 एवं ईथियोपिया में 34 है। इन सभी अफ्रीकी देशों की तुलना में भारत में शिशुओं की जन्म–मृत्यु दर कम है। अतः भारत अब अफ्रीकी देशों से इस मामले में बहुत आगे निकल आया है। हाँ, इस संदर्भ में भारत की तुलना यदि विकसित देशों से की जाएगी यथा अमेरिका में 5 एवं जापान में 2, तब जरूर भारत में इस स्थिति को अभी और अधिक सुधारने की आवश्यकता है, जिसके लिए केंद्र सरकार लगातार प्रयास कर रही है। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार बहुत तेज गति से किया जा रहा है। जिला स्तर पर मेडिकल कॉलेजों की स्थापना की जा रही है। भारत में इस संदर्भ में क्षेत्रीय विषमता भी दिखाई देती है। जैसे केरल, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, गुजरात, दिल्ली जैसे विकसित राज्यों में शिशुओं के जन्म के बीच जन्म–मृत्यु दर 10–15 के बीच ही है, जबकि उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश एवं बिहार जैसे राज्यों में यह 40–50 के बीच बनी हुई है। हालांकि धीमे–धीमे इन राज्यों में भी तेजी से सुधार दृष्टिगोचर है। देश में संस्थागत प्रसव की दर में सुधार हुआ है, परंतु जननी सुरक्षा, पोषण एवं टीकाकरण के क्षेत्रों में विशेष रूप से ग्रामीण इलाकों में अभी भी प्रयासों को गति दी जा रही है। इसी प्रकार ग्रामीण इलाकों में अति पिछड़े परिवारों (विशेष रूप से अनुसूचित जनजाति के क्षेत्रों में) के बीच गंदे पानी का उपयोग, कुपोषण, प्रसव के पूर्व की देखभाल में कमी के चलते शिशुओं के जन्म के बीच जन्म–मृत्यु दर को अभी और कम किया जाना शेष है। भारत में हालांकि स्वास्थ्य सेवाओं में तेजी से सुधार हुआ है, पर कुछ राज्यों पर अभी भी विशेष ध्यान केंद्रित कर 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' नीति से स्वास्थ्य सेवाओं को संतुलित किया जा रहा है।

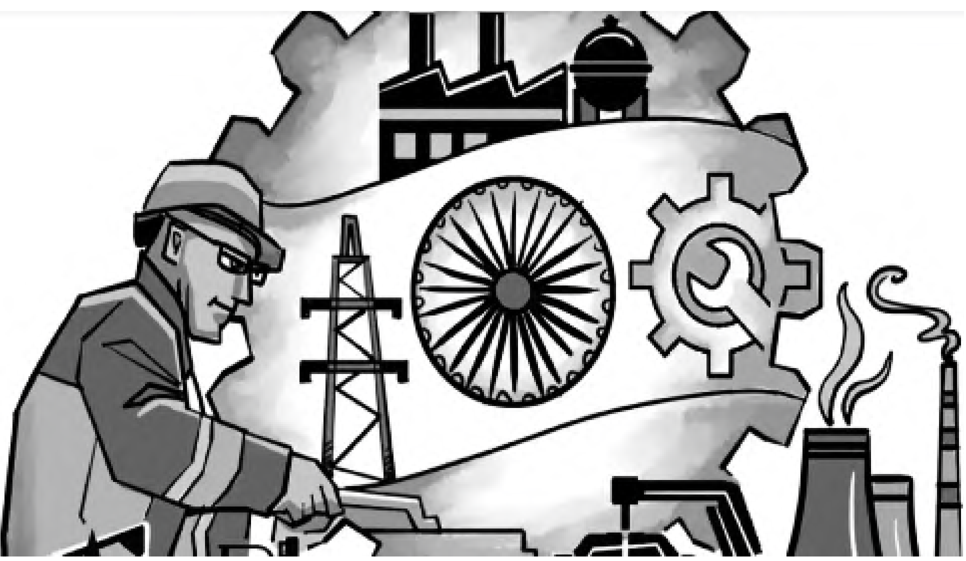

एक तीसरा झूठा विमर्श और खड़ा किया जा रहा है कि जब भारत आर्थिक प्रगति के पथ पर तेज गति से दौड़ रहा है, तो फिर 80 करोड़ नागरिकों को मुफ्त अनाज क्यों उपलब्ध कराया जा रहा है? तथ्यात्मक रूप से यह सही है कि भारत में "प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना" के अंतर्गत भारत में केंद्र सरकार द्वारा देश के 80 करोड़ नागरिकों को 5 किलो मुफ्त राशन प्रति माह उपलब्ध कराया जा रहा है। वस्तुतः भारत में अभी भी गरीबी पूर्ण रूप से समाप्त नहीं हुई है। सरकार का यह परम कर्तव्य है कि वह अपने नागरिकों को पर्याप्त मात्रा में भोजन उपलब्ध करवाए। कोरोना महामारी के खंडकाल में देश के नागरिकों पर आई प्राकृतिक आपदा के चलते करोड़ों की सँख्या में नागरिकों ने अपने रोजगार खोए थे, तथा इस गम्भीर समय में केंद्र सरकार ने अपने सामाजिक दायित्व का निर्वहन करते हुए देश के गरीब नागरिकों को उक्त योजना के अंतर्गत खाद्य सामग्री उपलब्ध कराना प्रारम्भ किया था, जो आज भी जारी है। वस्तुतः इसी योजना के चलते भारत में आज लाखों परिवार गरीबी रेखा से ऊपर उठकर मध्यम श्रेणी परिवार की श्रेणी में शामिल हो गए हैं एवं देश के आर्थिक विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। कोरोना महामारी के खंडकाल में मंहगाई एवं बेरोजगारी के दौर में देश के नागरिकों को आजीविका की गारंटी देना आवश्यक था। जब तक देश के समस्त परिवार आत्मनिर्भर नहीं हो जाते, तब तक इसे एक "ट्रैंजीशनल सिक्युरिटी नेट" माना जा सकता है। हाँ आगे आने वाले 3–5 वर्षों के दौरान इस योजना के अंतर्गत शामिल नागरिकों की सँख्या को कम जरूर किया जाना चाहिए, क्योंकि जो परिवार अब गरीबी रेखा से ऊपर उठकर मध्यम श्रेणी परिवार की श्रेणी में शामिल हो गए है, ऐसे परिवारों को उक्त योजना का लाभ अब बंद किया जाना चाहिए।

विनोद बंसल

पश्चिम बंगाल धीरे—धीरे पड़ोसी देश बाँग्लादेश की राह पर चलने की ओर अग्रसर है। कभी हिंदुओं के पर्वों—त्योहारों, महापुरुषों की जयंतियों और पुण्य तिथियों को मनाने से मनाही हो, तो, कभी दुर्गा पूजा जैसे मूल धार्मिक व साँस्कृतिक मान्यताओं पर आघात, कभी हिन्दू यात्राओं, घरों—दुकानों व धर्मस्थलों पर जिहादियों के जानलेवा हमले हों, तो, कभी मुर्शिदाबाद जैसी वीभत्स हिंसा, लूट—पाट व नरसंहार, कभी शिक्षा के मंदिरों में बच्चों के साथ दुराव तो कभी इस्लामिक जिहादियों के तुष्टीकरण हेतु राज्य सरकार द्वारा सभी सीमाएँ पार करने की बात, बार—बार वहाँ का हिन्दू समाज स्वयं को ठगा सा महसूस करता है। अभी हाल ही में तो राज्य के पूर्वी मेदिनीपुर जिले में स्थित दीघा जगन्नाथ मंदिर के प्रसाद का ठेका हलाल—कबाब बनाने वाले जिहादी थुक—थुक गेंग को देकर तो मानो राज्य सरकार ने यह पूरी तरह से स्पष्ट कर दिया है कि चाहे पैसा और आस्था आपकी दांव पर लगे, हम तो मुसलमानों को इसका लाभ दिलाकर रहेंगे। मंदिर को बने अभी 2 माह भी नहीं बीते कि राज्य सरकार द्वारा जानबूझकर उसकी पवित्रता को भंग करने के कुत्सित प्रयास आरंभ हो गए।

बंगाल में प्रसाद का ठेका जिहादी थूक-थूक गैंग को...!

गत अप्रैल के अंत में ही बने दीघा जगन्नाथ धाम के प्रसाद का वितरण बंगाल सरकार ‘दुआरे सरकार’ योजना के तहत करवा रही है। लेकिन इन प्रसाद के पैकेटों को जगन्नाथ मंदिर धाम ट्रस्ट द्वारा नहीं, बल्कि स्थानीय स्तर पर मुस्लिम मिठाई विक्रेताओं द्वारा बनाया जा रहा है। रानीनगर में दीघा जगन्नाथ धाम साँस्कृतिक केन्द्र के राशन डीलरों को जो प्रसाद वितरण के लिए चुने गए हैं, उनमें चार में से तीन मुस्लिम हैं। लोगों द्वारा पूछने पर उन्होंने स्पष्ट कहा कि हाँ ! हमारे यहाँ मिठाई और प्रसाद के साथ हलाल—कबाब भी बनता और बिकता है।

प्रसाद हिंदुओं का और पैसा जिहादियों को.. !!

प्रश्न उठता है कि क्या राज्य सरकार माननीय ‘तोषण’ की ओबीसी सूची की तरह मुसलमानों के आरक्षण को सुनिश्चित करने के लिए कदम उठा रही है? क्या मुस्लिम व्यापारियों द्वारा हिंदुओं को वितरित करने के लिए मिठाई तैयार करने के लिए करोड़ों रुपयों का ठेका दिया जाना, राज्य सरकार की जिहादी तुष्टीकरण की पराकाष्ठा नहीं? पुरी के जगन्नाथ धाम में तो गैर हिंदुओं का प्रवेश तक वर्जित है। तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी तक को पुरी के जगन्नाथ मंदिर में शायद इसीलिए नहीं घुसने दिया गया, क्योंकि वे स्वयं को हिन्दू घोषित नहीं कर पाईं। किन्तु यहाँ तो वे सभी बेरोक—टोक धड़ल्ले से मंदिर में जा—आ रहे हैं.. क्यों ? क्या उनकी भगवान जगन्नाथ में नई आस्था जगी है, या, मंदिर में कुछ और ही करने घुस रहे हैं ? ऐसे सभी प्रश्नों का जबाव राज्य सरकार को देना चाहिए।

प्रसाद बनाने की एक प्रक्रिया है

बात चाहे भगवान जगन्नाथ मंदिर की हो या अन्य किसी मंदिर की, वहाँ पर भगवान को अर्पित किए जाने वाले प्रसाद को बनाने की एक शास्त्रोक्त प्रक्रिया है, जिसका कड़ाई से पालन किया जाना जरूरी है। इसे शुद्ध तन से, पवित्र मन से और अंतर्मन से समर्पित होकर, सात्विक भाव पूर्ण तरीके से उचित खाद्य सामग्रियों के समुचित अनुपात पूर्वक प्रसन्नता से इसे बनाया जाता है। बनाते समय भी व्यक्ति या व्यक्तियों का मन—मस्तिष्क भगवत भाव से ओतप्रोत होना चाहिए। बनने के बाद सर्व प्रथम भगवान को ही आह्वान पूर्वक पूर्ण शुद्ध—सात्विक भाव से अर्पित किया जाना जरूरी है। तभी वह प्रसाद कहा जा सकता है। इस पूरी प्रक्रिया में मीट, मदिरा, मच्छी, प्याज, लहसुन इत्यादि तामसिक पदार्थों से दूरी जरूरी है। हम तो प्रसाद को माथे पर लगाते हैं और पैरों में पहनी चप्पल—जूतों को भी उतार कर प्रसाद लेते हैं। ऐसे में वे लोग जो सनातन धर्म को नहीं मानते, जो सनातनियों को काफिर समझते हैं, जो हलाल को अपना मजहबी अनिवार्य अंग मानते हैं, थूक—थूक कर खाद्य सामग्री और प्रसाद को अपवित्र करते हैं, वे यदि

कोई मिठाई बनाएंगे, तो, भगवान तो दूर, कोई सामान्य हिन्दू उसे छू भी नहीं सकता और ऐसे दुष्टों को प्रसाद का ठेका बंगाल सरकार ने दिया है। उन्हें प्रसाद के रूप में गाजा और पेंड़ा तैयार करने और बांटने का काम सौंपा जाना, क्या हिन्दुओं का घोर अपमान नहीं है? राज्य सरकार ने प्रसाद के पैकेट के लिए 20 रुपए दाम भी तय किए हैं, जिस पर राज्य सरकार 50 करोड़ से ऊपर खर्च कर रही है, ऐसी जानकारी है।

मजे की बात यह भी है कि मुख्यमंत्री ममता बनर्जी, जो स्वयं को बार–बार हिंदू बताते हुए नहीं थकतीं, को क्या एक छोटी सी बात नहीं पता कि पुरी के भगवान् जगन्नाथ मंदिर में तो गैर हिंदुओं का प्रवेश तक भी वर्जित है ? ऐसे में उनके प्रसाद निर्माण या वितरण का कार्य जिहादी थूक–थूक गैंग को देना क्या भगवान् जगन्नाथ का अपमान व मंदिर की पवित्रता पर गंभीर आघात नहीं ? ऊपर से उनके जिहादी मंत्री प्रसाद की तुलना पेट्रोल से करते हुए कहते हैं कि हम तो ऐसे ही करेंगे, जिसकी मर्जी हो प्रसाद ले, ना मर्जी हो तो ना ले। राज्य के जिहादी मंत्री फिरहाद हाकिम ने कहा कि 'प्रसाद में कोई धर्म नहीं होता है, इनकी मानसिकता छोटी है। भगवान तो सभी के हैं, भगवान के नाम पर प्रसाद तो सभी के लिए होता है।' हमारा कहना है कि यदि भगवान आपके भी हैं, तो, सिर्फ प्रसाद पर ही आप अपनी लार क्यों टपकाते हो, मंदिर में जाकर भगवान जगन्नाथ से सामने मत्था भी टेक कर आओ और अपने जिहादी कुकर्मों के लिए उनसे क्षमा याचना करो।

जिहादियों के तुष्टिकरण के लिए हिंदू आस्था पर इस प्रकार का हमला कदापि स्वीकार्य नहीं। मुख्यमंत्री बनर्जी को अपनी इस धृष्टता पर अविलंब भगवान् जगन्नाथ के साथ हिंदू समाज से क्षमा याचना करनी चाहिए। साथ ही हिंदू समाज को भी इस प्रकार के जिहादी हमलों से सचेत रहने की आवश्यकता है।

ivhpmedia@gmail.com

वात्सल्य वाटिका में किया गया हवन का आयोजन

हरिद्वार। हिंदुत्व के पुरोधा श्रद्धेय श्री अशोक सिंहल जी द्वारा रोपित एवम विश्व हिन्दू परिषद द्वारा संचालित अशोक सिंहल सेवाधाम वात्सल्य वाटिका (बहादराबाद) में दिनांक 01.07.2025 को हवन का आयोजन किया गया। प्रबंधक श्री प्रदीप मिश्रा जी ने विधिवत संकल्प पूर्ण कर पूजन किया। प्रकल्प सचिव श्री अरुण जी, संस्कारशाला प्रमुख श्रीमती नीता नैय्यर जी, महिला प्रमुख श्रीमती विमलेश गौड़ जी हवन के शुभ अवसर पर उपस्थित रहे तत्पश्चात वात्सल्य वाटिका के बच्चों सहित समस्त स्टाफ एवं उपस्थित सम्मानित कार्यकारिणी सदस्यों ने हवन में अपनी आहुति देकर पुण्य प्राप्त किया। हवन के उपरांत बच्चों ने सामूहिक आरती गायी। प्रसाद वितरण कर हवन कार्य संपन्न हुआ। अंत में प्रबंधक जी ने सभी बच्चों को अपना आशीर्वाद प्रदान किया। इस अवसर पर अधीक्षक श्री सुरेंद्र जी, रवि जोशी जी, श्रीमती स्नेहलता जी सहित समस्त स्टाफ उपस्थित रहा।

10 लोगों को ईसाई बनाओ और सैलेरी पाओ.... धर्मान्तरण को लेकर राजस्थान में यह कैसा खेल ?

राजस्थान में धर्मांतरण का जाल लगातार फैलता जा रहा है। लोगों को लालच देकर धर्म बदलने के लिए मजबूर किया जा रहा है। राज्य में धर्मांतरण रोकने के लिए कोई सख्त कानून नहीं है। इसलिए इस पर रोक लगाना मुश्किल हो रहा है। ईसाई बनाने के नाम पर लोगों को हर महीने वेतन, घर, कपड़े और राशन का लालच दिया जा रहा है। जयपुर, राजस्थान में रुपयों के लालच में फंसाकर धर्मांतरण कराने की जड़ें अपने पैर लगातार पसारती जा रही हैं, लेकिन राज्य में धर्मातंरण को रोकने के लिए प्रभावी कानून लागू नहीं होने से इस पर कोई प्रतिबंध नहीं लग पा रहा है। ईसाई बनाने के नाम पर लोगों को मासिक वेतन, घर, कपड़े और राशन दिए जाने का लालच दिया जा रहा है। इसके कारण कमजोर वर्ग के लोग इस लालच में फंसकर अपना धर्म परिवर्तन कर रहे हैं। इसमें धर्मान्तरण माफियाओं ने एक हैरान करने वाला ऑफर भी दिया कि अगर पूरे परिवार को ईसाई बनाते हैं, तो एकमुश्त लाखों रुपये भी पाओ।

ईसाई धर्म के लिए इस तरह भी फंसा रहे हैं लोगों को

प्रदेश में ईसाई मिशनरियाँ इतनी हावी हैं कि लोगों को फंसाने के लिए तरह–तरह के फंडे लगा रही हैं। हाल ही में कोटा में एक कोचिंग छात्रा ने सुसाइड नोट में बताया कि मुफ्त ट्यूशन के बदले उस पर चर्च जाने का दबाव डाला जा रहा था। बांसवाड़ा में चिकित्सा शिविर में लोगों को ईसाई बनने के लिए प्रलोभन दिए गए। जयपुर के सामोद में सिलाई मशीन के बदले धर्म सभाओं में आने को कहा। झालाना में मुफ्त किताबों के बदले पादरी ने बच्चों को ईसाई धर्म अपनाने का प्रलोभन दिया।

बांसवाड़ा में धर्म परिवर्तन पर मासिक वेतन का लालच

एक मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार बांसवाड़ा आदिवासी क्षेत्र में धर्म परिवर्तन का यह अभियान जोरों पर है। धर्म परिवर्तन करवाने वाले माफिया लगातार लोगों को लालच के जाल में फंसा कर अपने ईसाई धर्म का प्रसार कर रहे हैं। आदिवासी समुदाय के लोगों को यह लालच दिया जाता है कि अगर 10 लोगों को ईसाई बनवाएंगे, तो उन्हें हर महीने मासिक वेतन, राशन और कपड़े दिये जाएंगे। इसके अलावा ईसाई बनने पर 1 लाख रुपये का लालच भी दिया जा रहा है।

आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को फंसा रहे हैं माफिया

राजस्थान के झुंझुनू, हनुमानगढ़, श्री गंगानगर, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, भरतपुर समेत कई क्षेत्रों में धर्म परिवर्तन के कई मामले सामने आ चुके हैं। इसमें यह माफिया लोग हिंदू ग्रामीण महिलाओं को बुलाते हैं, प्रार्थना सभाएँ कर महिलाओं के माथे से बिंदी, सिंदूर और गले से मंगलसूत्र हटा देते हैं। इसकी जगह उनके गले में क्रॉस लटका देते हैं। यह माफिया लोग उन लोगों को ज्यादा टारगेट बनाते हैं, जो आर्थिक रूप से कमजोर होते हैं। उन्हें घर बनाने के लिए पैसा देने का भी लालच दिया जाता है। यहीं नहीं पूरे घर के सभी सदस्यों के धर्म परिवर्तन के लिए यह लोग तीन से 8 लाख रुपये तक देते हैं। इस लालच में फंसकर लोग धर्म परिवर्तन कर ईसाई धर्म स्वीकार कर रहे हैं।

धर्मांतरण विधेयक तो हो गया पेश, पर लागू कब होगा?

राजस्थान में धर्मांतरण विरोधी विधेयक पेश किया जा चुका है, लेकिन यह अभी पूरी तरह से कानून नहीं बना है। इसको लेकर भजनलाल सरकार ने फरवरी 2025 में राजस्थान विधानसभा में इस विधेयक को पेश किया, लेकिन यह अभी पास नहीं हुआ है। इस विधेयक का उद्देश्य धोखे, बल या प्रलोभन से होने वाले धर्मांतरण पर रोक लगाना है। इसमें जबरन धर्मांतरण के मामलों में कड़ी सजा का प्रावधान है। बता दें कि राजस्थान में धर्मांतरण को लेकर पहले भी विधेयक लाए गए हैं, लेकिन वे कानून का रूप नहीं ले पाए थे। अब यह नया विधेयक पिछले प्रयासों से अलग हैं और इसमें अधिक कड़े प्रावधान शामिल हैं, लेकिन यह कानून पास नहीं होने के कारण प्रदेश में धर्मान्तरण की जड़े लगातार फैलती जा रही है।

नए विधेयक में जबरन धर्मांतरण पर 3 से 10 साल की होगी सजा

भजनलाल सरकार की ओर से लाए गए नए विधेयक के अनुसार जबरन धर्म परिवर्तन कराने पर आरोपी को 3 से 10 साल तक की सजा का प्रावधान किया गया है। इस दौरान अपनी मर्जी से धर्म परिवर्तन करने पर भी 60 दिन पहले जिला कलेक्टर को इसकी सूचना देनी होगी। यह नियम झारखंड, कर्नाटक और गुजरात में पहले से लागू हो चुका है। इसके अलावा लव जिहाद करने वाले व्यक्ति के विवाह को पारिवारिक न्यायालय निरस्त कर सकता है। साथ ही यह गैर जमानती अपराध भी माना जाएगा।

(नवभारत टाईम्स, 29 जून, 2025 से साभार)

तेलंगाणा में सेवा विभाग की अ. भा. बैठक के अवसर पर उपस्थित विहिप संयुक्त महामंत्री श्री स्थाणु मालयन जी, संयुक्त महामंत्री श्री कोटेश्वर शर्मा जी, अ.भा.सेवा प्रमुख श्री अजय पारीक जी, केन्द्रीय प्रबंध समिति के सदस्य वाई. राघवुलू जी, अन्य अधिकारीगण व प्रांत के सेवा प्रमुख

अर्चक पुरोहित प्रशिक्षण वर्ग में अर्चकों के साथ उपस्थित विहिप केन्द्रीय सहमंत्री श्री हरिशंकर जी

छत्रपति संभाजीनगर में मुंबई क्षेत्र के दस दिवसीय पुजारी-पुरोहित प्रशिक्षण वर्ग में मुंबई क्षेत्र के चारों प्रांतों के 9 जिलों के 10 जातिविशेष के 22 प्रशिक्षार्थी व 3 आचार्य उपस्थित रहे।

गोरक्ष प्रांत के गोरखपुर में प्रचार-प्रसार विभाग की प्रांत बैठक आयोजित हुई, जिसमें अ.भा.प्रचार प्रसार प्रमुख श्री विजयशंकर तिवारी जी का मार्गदर्शन कार्यकर्ताओं को प्राप्त हुआ।

सहकारिता में नवाचार से नित नए आयाम गढ़ता मध्यप्रदेश

भोपाल : मंगलवार, अप्रैल 22, 2025, 15:39 IST

संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा वर्ष 2025 को अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। इस वर्ष की थीम है "सहकारिता एक बेहतर दुनिया का निर्माण करती है"। स्व से सब का भाव हो जाना ही सहकार है। भारतीय संस्कृति स्वयं से ऊपर उठकर हम की भावना रखना सिखाती है और इसी भावना से जन्म हुआ है सहकार का। सनातन संस्कृति में जब हम प्रार्थना करते हैं तो सर्वे भवन्तु सुखिनः की कामना करते हैं। सबके सुख और मंगल की यही कामना सहकारिता का मूल भाव है। हम लाभ से ज्यादा सेवा को महत्त्व देते हैं। एक से ज्यादा समूह को महत्त्व देते हैं। प्रतिस्पर्धा से ज्यादा परस्पर सहयोग को महत्व देते हैं और यही सहकारिता है।

भारत का सहकारिता आंदोलन सांस्कृतिक और सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य में गहराई से निहित है। यह आंदोलन समावेशी विकास, सामुदायिक सशक्तिकरण और ग्रामीण विकास के लिए एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में विकसित हुआ है। सहकारिता मंत्रालय की स्थापना और इसकी नवीनतम पहलों के माध्यम से सरकार ने एक सहकारिता-संचालित मॉडल को बढ़ावा देने की अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की है, जो देश के हर कोने तक पहुंचेगा और समाज की मुख्य धारा से अलग पड़े समुदायों के लिए स्थायी आजीविका और वित्तीय समावेशन की सुविधा प्रदान करेगा।

सहकारी समितियों को पुनर्जीवित करने की दृढ़ प्रतिबद्धता के साथ केन्द्रीय सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने इस क्षेत्र को मजबूत और आधुनिक बनाने के उद्देश्य से एक व्यापक नीतिगत ढांचा, कानूनी सुधार और रणनीतिक पहल शुरू की। सरकार ने सहकारी समितियों के लिए 'व्यापार करने में आसानी', डिजिटलीकरण के माध्यम से पारदर्शिता सुनिश्चित करने और वंचित ग्रामीण समुदायों के लिए समावेशिता को बढ़ावा देने की अपनी पहल पर काफी जोर दिया है। केन्द्रीय मंत्री श्री अमित शाह के नेतृत्व में भारत का सहकारिता आंदोलन एक क्रांतिकारी परिवर्तन लाया है। अपनी दूरदर्शी सोच को आधार बनाकर उन्होंने सहकारिता के लिए नई विचारधारा को जन्म दिया है। उनके नेतृत्व में सहकारिता मंत्रालय ने भारतीय सहकारी आंदोलन में उल्लेखनीय परिवर्तन किए हैं। प्राथमिक कृषि ऋण समितियों (पैक्स) का विस्तार, पैक्स के लिए बेहतर प्रशासन और व्यापक समावेशिता, पैक्स को कम्प्यूटरीकृत करने एवं पैक्स को नाबार्ड से जोड़ने का काम किया है।

नई श्वेत क्रांति की ओर अग्रसर मध्यप्रदेश

प्रदेश में सहकार से समृद्धि की पहल के तहत केन्द्रीय मंत्री श्री अमित शाह की उपस्थिति में राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड और स्टेट डेयरी को-ऑपरेटिव फेडरेशन तथा फेडरेशन से संबद्ध दुग्ध संघों के

RO NO. - D16044/25

बीच कोलेबोरेशन एग्रीमेंट हुआ। इस कोलेबोरेशन एग्रीमेंट के माध्यम से सहकारी डेयरी नेटवर्क को सशक्त बनाने का लक्ष्य है, जिससे दुग्ध उत्पादकों की आय में वृद्धि हो सके और सांची ब्रांड का उत्थान और विस्तार किया जा सके। यह नई श्वेत क्रांति की ओर प्रदेश का महत्वपूर्ण कदम साबित होगा। इसका लाभ दुग्ध उत्पादकों और दुग्ध उपभोक्ताओं दोनों को मिलेगा। दुग्ध उत्पादक राज्यों में मध्यप्रदेश टॉप-थ्री में है, हमारे यहां देश का करीब 9 प्रतिशत दुग्ध-उत्पादन होता है। प्रदेश में रोजाना करीब 551 लाख किलोग्राम दूध का उत्पादन होता है, जिसमें से मध्यप्रदेश स्टेट को-आपरेटिव डेयरी फेडरेशन और इससे जुड़े संघ करीब 10 लाख किलोग्राम दूध जमा करते हैं।

डेयरी क्षेत्र में अपार संभावनाओं वाला प्रदेश है मध्यप्रदेश

मध्यप्रदेश देश का फूड बास्केट तो है ही, हममें डेयरी कैपिटल बनने की क्षमता भी है। देश का डेयरी कैपिटल बनने के लिए हमारे पास पर्याप्त संसाधन हैं। प्रदेश में सहकारी डेयरी नेटवर्क को हाइटेक बनाने के लिए एक डेयरी डेवलपमेंट प्लान तैयार करने की योजना है, जिसमें लगभग 1450 करोड़ रुपए का निवेश होगा। प्रदेश में औसत दुग्ध संकलन को दोगुना किया जाएगा, दुग्ध संकलन को 10 लाख किलो से बढ़ाकर 20 लाख किलो प्रतिदिन करने का प्रयास शुरू कर दिया गया है। प्रदेश में दुग्ध सहकारी समितियों की संख्या 6 हजार से बढ़ाकर 9 हजार की जाएगी। प्रदेश भर के 18 हजार गांवों के दुग्ध-उत्पादन से जुड़े किसान भाइयों को सहकारी डेयरी नेटवर्क से जोड़ेंगे। ग्राम स्तर पर दुग्ध शीतलीकरण की क्षमता विकसित करेंगे, औसत पैकेट दुग्ध विक्रय 7 लाख लीटर प्रतिदिन से बढ़ाकर 15 लाख लीटर प्रतिदिन करेंगे।

मिल्क प्रोसेसिंग क्षमता बढ़ाने के लिए नए हाइटेक संयंत्र स्थापित किए जाएंगे, जिससे दुग्ध संकलन और दुग्ध विक्रय में वृद्धि हो सके। सभी दुग्ध संघों का व्यवसाय 1944 करोड़ से बढ़ाकर 3500 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष किया जाएगा। एनडीडीबी द्वारा एमपीसीडीएफ एवं दुग्धसंघों के प्रबंधन, संचालन, तकनीकी सहयोग, नवीन प्रसंस्करण एवं अन्य अधोसंरचनाएं विकसित करेंगे। एनडीडीबी द्वारा दुग्ध सहकारी समितियों के सभी सदस्यों, सचिवों, प्रबंधन समिति के सदस्यों और दुग्ध संघों के कर्मचारियों को स्वच्छ और गुणवत्तायुक्त दुग्ध उत्पादन के लिए विशेष प्रशिक्षण दिया जाएगा।

सहकारिता से सरल हुई सशक्तिकरण की राह

प्रदेश में डेयरी गतिविधियों के लिए त्रि-स्तरीय सहकारी संस्थाओं का गठन कर, ग्रामीण दुग्ध सहकारी समितियां, सहकारी दुग्ध संघ और राज्य स्तर पर एमपीसीडीएफ (मध्यप्रदेश स्टेट कोआपरेटिव डेयरी फेडरेशन लिमिटेड) की स्थापना की गई। ये दुग्ध सहकारी समितियां किसानों से दूध संग्रह, गोवंश के कृत्रिम गर्भाधान, संतुलित पशु आहार, तकनीकी पशु प्रबंधन, उन्नत चारा बीज, पशु उपचार और टीकाकरण जैसी सुविधाएं देने की जिम्मेदारी निभा रही हैं।

दुग्ध उत्पादक किसानों के साथ मध्यप्रदेश सरकार

डेयरी क्षेत्र विकसित करने के संकल्पों की सिद्धि के लिए प्रदेश में श्वेतक्रांति मिशन के अंतर्गत 2500 करोड़ रुपए के निवेश का लक्ष्य है। प्रदेश में निराश्रित गौवंश की समस्या के निराकरण के लिए स्वावलंबी गौशालाओं की स्थापना की नीति : 2025 की स्वीकृति दी है। गौ-शालाओं को पशु चारे और आहार के लिए दी जाने वाली अनुदान राशि को भी 20 रुपये प्रति गौवंश प्रति दिवस से बढ़ाकर 40 रूपये प्रति गौवंश प्रति दिवस करने का निर्णय लिया गया है।

मुख्यमंत्री पशुपालन विकास योजना अब डॉ. भीमराव अम्बेडकर कामधेनु योजना के नाम से जानी जाएगी। डॉ. भीमराव अम्बेडकर कामधेनु योजना अंतर्गत 25 दुधारू गाय अथवा भैंस की इकाई स्थापित करने का प्रावधान किया गया। प्रदेश की गौ शालाओं को हाइटेक बनाया जा रहा है। ग्वालियर स्थित आदर्श गौ-शाला में देश के पहले 100 टन क्षमता वाले सीएनजी प्लांट की स्थापना की गई है। भोपाल के बरखेड़ी-डोब में 10 हजार गौ-वंश क्षमता वाली हाइटेक गौ-शाला बनाई जा रही है। प्रदेश के सवा 2 लाख किसानों एवं दुग्ध उत्पादकों को सहकारिता के माध्यम से जोड़ा गया है।

सरकार द्वारा दुग्ध सहकारी संघों के डेयरी प्रोडक्ट्स को मार्केट लिंकेज दिलाकर वैश्विक सप्लाई चेन से कनेक्ट करने की योजना पर कार्य किया जा रहा है। पशुपालन को बढ़ावा देने के लिए नई योजना के तहत 25 या 25 से ज्यादा गायों का पालन करने वाले पशुपालकों को पशुपालन पर अनुदान दिया जाएगा।

जीआईएस से शुरू हुआ मध्यप्रदेश में सहकारिता का नया अध्याय

सहकार को बढ़ावा देने के लिए इस वर्ष हुई ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में पहली बार सहकारिता क्षेत्र को जोड़ा गया है। समिट में सहकारिता क्षेत्र में 2305 करोड़ से अधिक के 19 एमओयू साइन हुए हैं। को-ऑपरेटिव पब्लिक प्राइवेट-पार्टनरशिप (सीपीपीपी) मॉडल पर भी काम किया गया। सीपीपीपी मॉडल देश की सहकारिता को बदलने का काम करेगा। सहकारिता विभाग में निवेश विंग की स्थापना करने का निर्णय लिया है। निवेश विंग डे-टू-डे काम करेगी।

RO NO. - D16044/25

रोटोरुआ (न्यूज़ीलैण्ड) के हिंदू हेरिटेज सेंटर में 11वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया

अशोकनगर में विहिप द्वारा आयोजित सर्व हिंदू समाज प्रतिभा सम्मान कार्यक्रम में 38 समाज की 242 प्रतिभाओं का सम्मान किया

श्री विजय नगरम् (अण्डमान निकोबार) में भगवान जगन्नााथ की भव्य रथ यात्रा का आयोजन

विहिप प्रचार प्रसार विभाग की प्रांत बैठक हरियाणा के रोहतक में सम्पन्न हुई

अजय कुमार, वरिष्ठ पत्रकार

केरल में भारत माता का अपमान
यह केवल चित्र नहीं देश की आत्मा पर चोट है !

भारत माता..... एक ऐसा नाम, एक ऐसा भाव, जो करोड़ों भारतीयों के दिल की धड़कन है। जब कोई 'भारत माता की जय' बोलता है, तो, ये केवल एक नारा नहीं होता, बल्कि एक ऐसी पुकार होती है, जिसमें देशभक्ति, श्रद्धा और मातृत्व का गहरा बोध समाहित होता है। लेकिन दुर्भाग्य देखिए, उसी भारत माता की तस्वीर अब देश के भीतर विवाद की जड़ बन रही है। जिस तस्वीर के सामने स्वतंत्रता सेनानी सिर झुकाकर बलिदान की प्रेरणा लेते थे, उसे देखकर अब केरल के एक मंत्री की आंखें चुभने लगी हैं। केरल के कृषि मंत्री पी प्रसाद ने पर्यावरण दिवस पर राजभवन में आयोजित कार्यक्रम का सिर्फ इसलिए बहिष्कार कर दिया, क्योंकि मंच पर भारत माता की तस्वीर लगी थी। यह घटना एक प्रतीक भर नहीं है, यह उस वैचारिक युद्ध की प्रत्यक्ष झलक है, जो अब भारत की आत्मा से टकरा रहा है।

पी प्रसाद भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के नेता हैं। वही पार्टी, जिसकी जड़ें भारत में नहीं, बल्कि 1920 के दशक में सोवियत रूस के ताशकंद में पड़ी। एक विदेशी धरती पर जन्मी विचारधारा का भारत में प्रवेश होना ही एक चेतावनी थी कि इसकी नजर भारतीय सँस्कृति, परंपरा और भावनाओं से मेल नहीं खाती और यही हुआ भी। आजादी के आंदोलन में जब देश के कोने–कोने में भारत माता की जय के उद्‌घोष के साथ आंदोलनकारी सड़कों पर उतर रहे थे, उसी वक्त वामपंथी विचारधारा सोवियत संघ के हितों की रक्षा में व्यस्त थी। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में इनका हिस्सा न बनना इस बात की सबसे बड़ी गवाही है।

जब–जब भारत माता का स्वर प्रबल हुआ, तब–तब लेफ्ट ने अपना मुख कहीं और मोड़ लिया। जब महात्मा गाँधी अँग्रेजों को "भारत छोड़ो" कह रहे थे, तब कम्युनिस्ट नेता सोवियत संघ की नीति के अनुसार चुप बैठे थे। जब 1962 में चीन ने भारत की सीमाओं पर हमला किया, तब भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने न केवल चीन के दावों का समर्थन किया, बल्कि 'बीजिंग नजदीक है, दिल्ली दूर' जैसे नारे दिए। एक विचारधारा जो भारत माता को माँ नहीं मानती, बल्कि एक साम्राज्यवादी कल्पना मानती है, वो विचारधारा जब सत्ता में आती है, तो भारत माता की तस्वीर से चिढ़ होना स्वाभाविक हो जाता है।

भारत माता का चित्र कोई धर्म विशेष का प्रतीक नहीं है। यह चित्र अबनिंद्रनाथ टैगोर ने 1905 में बनाया था, जिसमें भारत को चार हाथों वाली देवी के रूप में दर्शाया गया, जिनके हाथों में वेद, चावल, सफेद वस्त्र और माला होती थी। ये प्रतीक उस भारत का था, जो सॉँस्कृतिक रूप से समृद्ध, आत्मनिर्भर और ज्ञान से परिपूर्ण था। यह चित्र उस समय बना जब बंग–भंग के कारण राष्ट्रवाद की लहर तेज हो रही थी। भारत माता उस राष्ट्रवादी चेतना का नाम थी, जिसने आजादी की लड़ाई को जनांदोलन में बदल दिया। यही कारण था कि वीर सावरकर से लेकर भगत सिंह और सुभाष चंद्र बोस तक, सभी भारत माता को केंद्र में रखकर लड़ते रहे।

लेकिन अब उस चित्र को लेकर यह तर्क दिया जा रहा है कि वह "सरकारी रूप से अधिकृत प्रतीक" नहीं है। केरल सरकार ने यहाँ तक कह दिया कि भारत माता का कोई आधिकारिक चित्र नहीं है और इसीलिए उसे किसी सरकारी मंच पर रखना असंवैधानिक है। कृषि मंत्री पी प्रसाद ने यह आरोप लगाया कि भारत माता के चित्र पर एक राजनीतिक संगठन का झंडा लगा हुआ था, इसलिए वे उसे स्वीकार नहीं कर सकते। सवाल यह है कि क्या भारत माता अब केवल एक पार्टी का विचार बन गई है? क्या आज भारत माता की जय बोलना किसी राजनीतिक विचारधारा से जुड़ गया है?

राज्यपाल राजेंद्र वी. आर्लेकर ने इस पूरे विवाद में स्पष्ट कहा कि भारत माता के सम्मान से कोई समझौता नहीं होगा। यह बयान सिर्फ एक व्यक्ति का नहीं था, यह उस करोड़ों भारतीयों की

भावना का प्रतिनिधित्व करता था, जो भारत माता को केवल एक प्रतीक नहीं, एक सजीव सत्ता मानते हैं। लेकिन दुर्भाग्य देखिए कि राज्य के शिक्षा मंत्री वी. शिवनकुट्टी भी इस मुद्दे में कूद पड़े और बोले कि राज्यपाल को राजनीति से ऊपर उठना चाहिए। यानी अब भारत माता की तस्वीर रखना राजनीति है, लेकिन उस पर आपत्ति जताना राष्ट्रहित!

भारत माता की तस्वीर को लेकर इतने तीव्र विरोध का अर्थ केवल एक साँस्कृतिक टकराव नहीं है। यह उस दीर्घकालीन वैचारिक विभाजन का परिणाम है, जिसमें एक धड़ा सदैव भारत को सिर्फ एक भूगोल मानता आया है, जबकि दूसरा धड़ा इसे मातृभूमि के रूप में देखता रहा है। लेफ्ट की राजनीति हमेशा विदेशी सिद्धांतों से प्रेरित रही है। चाहे वह मार्क्सवाद हो या माओवाद, भारतीय सोच और परंपरा का इसमें कोई स्थान नहीं रहा। यही कारण है कि भारत माता के चित्र से इन्हें चिढ़ होती है। क्योंकि यह चित्र उस भारत का प्रतिनिधित्व करता है, जो अपने साँस्कृतिक गौरव पर गर्व करता है, जो अपने इतिहास से सीखता है, और जो माँ को ईश्वर के समान मानता है।

आज यह सोच केवल केरल तक सीमित नहीं है। यह सोच देश के अलग – अलग हिस्सों में मौजूद है, जो भारत के मूलभाव को छिन्न–भिन्न करने पर तुली हुई है। यह वही सोच है जो 'अफजल हम शर्मिंदा हैं, तेरे कातिल जिंदा हैं' जैसे नारे देती है। यह वही सोच है जो कभी जेएनयू से उठती है और कभी कन्हैया कुमार की आवाज बनकर फैलती है। अब इस सोच को अगर सरकार का संरक्षण मिल जाए तो वह भारत माता की तस्वीर को मंच से हटवाने का साहस कर बैठती है।

लेकिन यहाँ एक और गहरी बात छुपी है। आज देश में राष्ट्रवाद को संकीर्ण दृष्टि से देखने की प्रवृत्ति बढ़ी है। भारत माता की तस्वीर या 'वंदे मातरम' जैसे नारों को कुछ लोग धार्मिक रंग में रंगने की कोशिश करते हैं। परंतु यह चित्र और ये नारे केवल धार्मिक नहीं, साँस्कृतिक और राष्ट्रीय चेतना के प्रतीक हैं। भारत माता का चित्र देखकर किसी को आपत्ति होती है, तो सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या उनका भारत से जुड़ाव केवल संविधान की किताबों तक सीमित है? क्या वे उस भारत को नहीं पहचानते, जिसे करोड़ों लोग माँ कहते हैं?

इस विवाद पर बीजेपी ने कड़ा रुख अपनाया। प्रदेश अध्यक्ष के. सुरेंद्रन ने राज्य सरकार के इस रुख को राष्ट्र विरोधी करार दिया और कहा कि भारत माता का अपमान देश का अपमान है। वहीं काँग्रेस ने भी राजभवन में राजनीतिक एजेंडे को थोपने की कोशिश की, आलोचना की और कहा कि राज्यपाल को राजनीतिक प्रतीकों से दूरी बनानी चाहिए। लेकिन भारत माता की तस्वीर को केवल एक राजनीतिक प्रतीक मानना ही अपने आप में एक बड़ी भूल है। यह चित्र न किसी पार्टी का है और न किसी संगठन का। यह उस भावनात्मक जुड़ाव का प्रतीक है, जिसे हर भारतवासी महसूस करता है।

पी. प्रसाद जैसे मंत्री संविधान की शपथ लेकर सत्ता में आते हैं, लेकिन जब भारत माता का चित्र सामने आता है, तो शपथ में समाहित भावना को भी नजरअंदाज कर देते हैं। यह विडंबना नहीं तो और क्या है ? भारत के प्रत्येक नागरिक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह देश के प्रतीकों, ध्वज, राष्ट्रगान और साँस्कृतिक विरासत का सम्मान करे। फिर एक मंत्री जब भारत माता की तस्वीर से परहेज करता है, तो, यह केवल उनका निजी मत नहीं रह जाता, यह एक राजनीतिक संदेश बन जाता है, ऐसा संदेश जो राष्ट्रवाद को टुकड़ों में बांटने की कोशिश करता है।

यह घटना हमें उस खतरे की चेतावनी देती है, जो भारत की एकता और अखंडता के लिए भीतर से उठ रहा है। देश को तोड़ने वाली ताकतें केवल सीमाओं से नहीं आतीं, वे उस मानसिकता से आती हैं, जो अपने देश की आत्मा को पहचानने से इनकार करती हैं। भारत माता की तस्वीर से चिढ़ना उस चेतना को अस्वीकार करना है, जो इस देश को जोड़ती है। यह केवल एक चित्र नहीं, यह एक विचार है, एक आस्था है, एक भावना है जो भारत को भारत बनाती है।

देश को आज ऐसे लोगों की जरूरत है, जो भारत माता की जय को राजनीति नहीं, बल्कि श्रद्धा समझें। जिन्हें राष्ट्रगान सुनकर सम्मान की भावना हो और भारत माता की तस्वीर देखकर आँखों में नमी और माथे पर झुकाव आए। वरना वह दिन दूर नहीं जब भारत केवल संविधान की किताब में सिमट कर रह जाएगा और भारत माता एक विवादास्पद प्रतीक बनकर रह जाएगी। यह समय है कि देश की आत्मा को फिर से पहचाना जाए, उसे गले लगाया जाए, क्योंकि भारत माता का अपमान किसी भी सूरत में सहन नहीं किया जा सकता। यही भारत का सच्चा स्वाभिमान है। यही भारत की सच्ची पहचान है।

ajaimayanews@gmail.com

कांवड़ यात्रा पर
जिहादी हमले और उनके पैरोकार

विनोद बंसल

अनादिकाल से जारी कांवड़ यात्रा विश्व की एक ऐसी अनुपम और विराट यात्रा है, जहाँ पर करोड़ों श्रद्धालु गंगोत्री, यमुनोत्री और हरिद्वार सहित कुछ अन्य पवित्र धर्मस्थलों से जल भरकर के सैकड़ों किलोमीटर की यात्रा तय कर भगवान शिव को अर्पित करते हैं। वे कई दिनों की साधना, तपस्या और अनवरत सात्विक व्यवहार के साथ नंगे पैर, पैदल चलते हुए भगवान शंकर पर चढ़ाए जाने वाले जल को जमीन पर भी नहीं रखते। सात्विक खाना, सात्विक रहना, और मांस मदिरा व अन्य किसी भी प्रकार के व्यसन इत्यादि से दूर रहना उनके लिए एक अनिवार्य शर्त होती है। यह यात्रा कालांतर में देश के कुछ अन्य स्थानों से भी प्रारंभ होकर श्रद्धालु अपने निवास के पास के शिवालयों में पूर्ण करते हैं। ऐसी साधना पूर्ण यात्रा में लगभग आठ करोड़ कांवड़ यात्री प्रतिवर्ष भाग लेते हैं। उनके दो ही उदघोष होते हैं "बम बम भोले" और "भारत माता की जय"। भगवा के साथ तिरंगा भी साथ चलता है। ऐसे में यह यात्रा धार्मिक के साथ राष्ट्रीय महत्व की भी एक बड़ी यात्रा बन जाती है। यात्रा में सम्मिलित लोग हर मत–पंथ, संप्रदाय, भाषा, विचार और क्षेत्र के होते हैं, जिनके बीच में कोई भेदभाव ना हो कर ही भाव होता है हिंदुत्व, राष्ट्रीयता और शिव भक्ति ही होती है।

पिछले कुछ वर्षों में इस यात्रा के मार्ग में अनेक प्रकार के अवरोध देखने को मिले। यात्री इधर से नहीं जा सकते तो कभी उधर से नहीं जा सकते। कभी कांवड़ ऐसी बनाना तो कभी कांवड़ ऐसी ले कर आना। कभी यात्रियों पर मल, मूत्र, मांस फेंकना, तो पवित्र जल को अपवित्र करना। यात्रियों की खाद्य सामग्री में अपशिष्ट पदार्थों की मिलावट कर उनकी साधना को भंग करने के अनेक प्रयास इस्लामी विधर्मियों व हिंदू धर्म द्रोहियों द्वारा देखे गए।

इसी कारण गत वर्ष विश्व हिंदू परिषद ने मांग की थी कि सभी हिंदू धार्मिक स्थलों और हिंदुओं की पवित्र यात्राओं के मार्ग में किसी प्रकार की मांस–मंदिरा और खाद्य सामग्री क्षद्म नाम से ना बेची जाए। विक्रेता को अपना नाम और पहचान स्पष्ट करनी चाहिए। क्योंकि ऐसे अनेक होटल, ढाबे, रेस्टोरेंट इत्यादि हैं, जो हिंदू देवी, देवताओं और व्यक्तियों के नाम से चलते हैं, किंतु, वास्तव में उसके संचालक, कर्मचारी और मालिक मुसलमान होते हैं, जो कि हलाल की सामग्री बेचकर यात्रियों की कठिन साधना को भंग करने के षडयंत्र करते हैं।

इस बार उत्तरप्रदेश व उत्तराखंड की सरकारों द्वारा कुछ कठोर कदम उठाते हुई कहा गया कि यात्रा मार्ग पर प्रत्येक प्रतिष्ठान को अपनी पहचान स्पष्ट रूप से अंकित करनी पड़ेगी। जो लोग शिव ढाबा, गुप्ता ढाबा, गुप्ता चाट भंडार, पंडित जी का ढाबा इत्यादि अनेक हिंदू नाम से प्रतिष्ठान चला रहे हैं और उनके मालिक या कर्मचारी इस्लामी जिहादी मान्यता में विश्वास करते हैं। कभी रोटी पर, कभी नॉन पर, कभी सब्जी में, कभी फलों में, कभी जूस में, कभी दूध में, और तो और भगवान को चढ़ाए जाने वाले प्रसाद व फूलों में भी थूक, मूत्र और ना जाने कितने प्रकार की घृणित व अखाद्य पदार्थ मिलाकर बेच रहे हैं।

इस वर्ष तो यात्रा मार्ग में ही इस प्रकार की घटनाएँ कांवड़ यात्रा प्रारंभ होने से पूर्व ही देशव्यापी चर्चा की बिंदु बन गईं। कुछ ढाबे व रेस्टोरेंट पकड़े गए तो उन जिहादियों के बचाव के लिए कई राजनेता और राजनीतिक दल सामने आ गए।

'नमाजवादी व मुसलमीन पार्टी के झूठे नेता माफी मांगें'

अभी हाल ही में मुजफ्फरनगर में, कांवड़ यात्रा मार्ग पर, पकड़े गए एक ढाबे को, जिहादी सनव्वर 'पंडित जी' बनकर धोखे से चला रहा था। ढाबे का नाम उसने मोटे–मोटे अक्षरों में 'पंडित जी वैष्णो ढाबा' रखा था। आदिल रोटी बनाता था और तजम्मुल S/o मकसूद स्वयं गोपाल बन कर लोगों को खाना परोसने व सफाई का कार्य करता था। यही तजम्मुल पहले तो अपनी पहचान छुपाकर हाथों में कड़ा व कलावा पहनकर स्वयं को गोपाल बता रहा था। हिंदुओं पर पैंट उतारकर कर उसका मजहब चेक करने का आरोप लगा रहा था। किंतु जब घटना देशभर के मीडिया में वायरल हुई, तो यूपी पुलिस, मीडिया और उसके पड़ोसियों ने उसकी सारी कलई खोल दी। उसने स्वयं कैमरे के सामने स्वीकार किया कि वह गोपाल नहीं तजम्मुल है और ढाबे का मालिक सनव्वर है। पैंट उतरवाने की बात उसने झूठी कहानी के रूप में गढ़ी थी।

प्रश्न उठता है कि इतने कठोर कानून और यूपी व उत्तराखण्ड सरकार के बार–बार चेतावनी के बाद भी ये जिहादी छद्म भेष में छुपकर हमारी कांवड़ यात्रा की पवित्रता व साधना में खलल क्यों डालना चाहते हैं ? ओवैसी व एसटी हसन जैसे सांसद तथा झूठे व जिहादियों के नेता ऐसे समाज–कंटकों के साथ आँख मूंदकर सामाजिक सौहार्द की हत्या पर उतारू क्यों हो जाते हैं? पैंट खोलने की झूठी बात पर क्या वे माफी नहीं मांगेंगे? क्या हिंदुओं को आतंकी और झूठों को अपना बताने पर उन्हें तनिक भी लज्जा नहीं आई? नमाजवादी व मुसलमीन पार्टी के ऐसे नेता क्या कभी अपनी हिंदूद्रोही मानसिकता से बाहर निकलकर जिहादियों की पैरोकारी तथा काफिरोफोबिया से बाहर निकलेंगे?

अब सम्पूर्ण देश का हिंदू समाज एकजुटता के साथ कांवड़ यात्रियों की साधना की रक्षार्थ अडिग हो कर खड़ा है। अब इन थूक जिहाद, मूत्र जिहाद चलाने वाली थुक–थुक गैंग के जिहादियों तथा उनके पैरोकारों को भी समझना होगा कि वे अपनी हिंदू द्रोही व राष्ट्रद्रोही मानसिकता से बाज आएँ।

''थूक जिहाद'' (Spit Jihad) की कतिपय घटनाओं की सूची भी दे रहे हैं'

1. मेरठ (फरवरी 2025)
शादी समारोह में तंदूरी रोटी बनाने वाले कारीगर द्वारा रोटी पर बार–बार थूक लगाने का वीडियो वायरल हुआ। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार किया और मामले की जांच शुरू की।

2. बागपत (दिसंबर 2024)
एक शादी समारोह में थूक कर नान (रोटी) सेंकने का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ। पुलिस ने मामले को दर्ज कर आरोपित की पहचान के प्रयास शुरू किए।

3. गाजियाबाद – खोड़ा (जनवरी 2025)
एक युवक (इरफान) द्वारा रोटी पर थूक लगाने का वीडियो वायरल हुआ। पुलिस ने उसे गिरफ्तार किया और खाद्य सुरक्षा जांच की।

4. गाजियाबाद – कई घटनाएँ
23 फरवरी 2025 को एक शादी समारोह में नान पर, 16 मार्च 2025 को नाज चिकन कॉर्नर में होटल की रोटी में, जनवरी 2025 को खोड़ा क्षेत्र में एक ढाबे की रोटी में, दिसंबर 2024 में मोदीनगर क्षेत्र में थूक जिहाद का मामला सामने आया।

5. सहारनपुर (जून 2025)
बेहट क्षेत्र के एक होटल में व्यक्ति द्वारा रोटी बनाने के दौरान थूकने का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ, बजरंग दल की शिकायत पर पुलिस ने एफआईआर दर्ज की।

6. बागपत – सब्जी मंडी (दिसंबर 2024)
सब्जी विक्रेता के सब्जियों पर थूक कर बेचने का वीडियो वायरल हुआ–पुलिस ने खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत मुकदमा दर्ज किया।

7. बाराबंकी (अक्टूबर 2024)
ढाबे में कारीगर के रोटी पर थूक लगाने का वीडियो वायरल हुआ, फूड एंड सेफ्टी टीम ने ढाबा सील किया और आरोपी को गिरफ्तार किया।

8. अहमदाबाद (जून 2025)
एक मिल्क फैक्ट्री में कर्मचारी ने दूध में थूक मिलाकर वीडियो बनाकर वायरल किया, पुलिस जांच के साथ–साथ सार्वजनिक गुस्से की प्रतिक्रिया सामने आई!

इनके अतिरिक्त
9. मुरादाबाद (29 अक्टूबर 2024)
10. अलीगढ़ (24 अप्रैल 2025)
11. बागेश्वर, उत्तराखण्ड (18 जनवरी 2025)
12. मेरठ (27 मई 2025)
13. लखनऊ (5 जनवरी 2025)

14. दूध की कैन में थूक कर बांटा दूध, विडियो वायरल
गोमती नगर के विनय खंड निवासी लव शुक्ला ने बताया कि मल्हौर का पप्पू उर्फ शरीफ बीते कई वर्षों से उनके और कालोनी के अन्य घरों में दूध देता है। शनिवार की सुबह लव घर का सीसी टीवी कैमरा चेक कर रहे थे। इसमें शरीफ दूध के बर्तन में थूकता नजर आया।

15. मुजफ्फरनगर (जून 2025)
कांवड़ यात्रा मार्ग पर रुड़की रोड स्थित राज मार्केट के लजीज चिकन स्टोर में थूककर रोटी बनाने पर शाहनवाज को गिरफ्तार किया गया।

मानसून डाइट

ऐसे में क्या खाएं, क्या न खाएं ताकि इंफेक्शन का खतरा ना रहे

1. मानसून के दौरान, सरसों के तेल, मक्खन या मूंगफली के तेल में बना खाना खाने से बचना चाहिए, क्योंकि ये तेल थोड़े भारी होते हैं। इनसे तैयार भोजन को पचने में दिक्कत होती है। पाचनतंत्र को बेहतर रखने के लिए खाने में जैतून का तेल, घी या सूरजमुखी तेल का उपयोग करना चाहिए। यह तेल दूसरे तेलों की तुलना में हल्के होते हैं।

2. इस मौसम में ज्यादातर लोग गर्म और तला हुआ खाना पसंद करते हैं, लेकिन इन्हें पचाना मुश्किल है, इसीलिए इन्हें रोजाना खाने से बचें। अधिक से अधिक सब्जियों और फलों को डाइट में शामिल करें, क्योंकि ये आसानी से पच जाते हैं और कई जरूरी विटामिंस और मिनिरल्स पाए जाते हैं। सबसे जरूरी बात है कि इन्हें अच्छे से धोने के बाद ही इस्तेमाल करें ताकि बैक्टीरियल इंफेक्शन का खतरा कम किया जा सके।

3. मानसून के दौरान सड़क के किनारे मिलने वाले स्ट्रीट फूड को खाने से बचना चाहिए, क्योंकि इनसे इंफेक्शन या पेट से जुड़ी बीमारी का खतरा अधिक होता है। इसके अलावा सी–फूड जैसे मछली और झींगा से भी दूरी बनाएँ। डाइट में फल जैसे सेब, आम, अनार, नाशपाती जरूर शामिल करें। ध्यान रखें आम को अधिक मात्रा में न लें, इससे पिंपल होने की आशंका रहती है। चाहें तो फलों को सलाद के रूप में भी ले सकते हैं।

4. बरसात के मौसम में कच्चा सलाद खाने से बचना चाहिए, क्योंकि इसमें कीड़े होने का डर बना रहता है। अगर खाना ही हो तो सलाद को स्टीम्ड करके खाएँ। इससे सलाद के कीटाणु भी नष्ट हो जाएंगे और ये ज्यादा हेल्दी भी साबित होगा।

5. कच्चा दूध भी इस मौसम में पीने से बचना चाहिए। नमी के कारण इसमें बैक्टीरिया अधिक पनपते हैं, इस कारण पाचनतंत्र प्रभावित हो सकता है। दूध ले भी रहे हैं तो उबालकर ही पीएँ, खासकर ऐसे लोग जिन्हें उल्टी–दस्त की समस्या हुई हो।

6. भले ही बारिश के बाद तापमान कम हो गया हो, लेकिन शरीर में पानी की कमी न होने दें। दिनभर में कम से कम 8–10 गिलास पानी जरूर पीएँ। इस मौसम में पानी की कमी पूरी करने के लिए फलों का जूस लिया जा सकता है। जो विटामिंस के साथ मिनिरल्स की भी पूर्ति करेंगे। मानसून के दौरान सड़क के किनारे मिलने वाले स्ट्रीट फूड को खाने से बचना चाहिए, क्योंकि इनसे इंफेक्शन या पेट से जुड़ी बीमारी का खतरा अधिक होता है।

7. इस मौसम में हर्बल–टी विशेष लाभ पहुँचाती है। इसमें मौजूद तत्व शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं। इसमें चाहें तो अदरक, काली मिर्च और शहद का भी प्रयोग कर सकते हैं।

8. इस मौसम में शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है, ऐसे में डाइट करेला, मेथी, नींबू और मौसमी जरूर शामिल करें। इनमें विटामिन–सी अधिक पाया जाता है, जो इम्युनिटी बढ़ाते हैं।

11वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस हिंदू हेरिटेज सेंटर रोटोरुआ में मनाया गया

शनिवार, 21 जून 2025 को रोटोरुआ में हेरिटेज सेंटर में 11वां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस उत्साह और एकता के साथ मनाया गया। इस वर्ष की थीम है, 'एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग' यह व्यक्तिगत खुशहाली और हमारे ग्रह के स्वास्थ्य के बीच गहरे संबंध को दर्शाता है। इस कार्यक्रम ने माओरी सहित विभिन्न साँस्कृतिक पृष्ठभूमियों से प्रतिभागियों को आकर्षित किया। इतालवी, जर्मन, अमेरिकी, ऑस्ट्रेलियाई, चीनी, फ्रैंच, कुक आइलैंड्स, भारतीय और फिजी समुदाय–योग को एक साँझा अभ्यास के रूप में उजागर कर रहे हैं, जो साँस्कृतिक सीमाओं से परे है।

राष्ट्रव्यापी हेल्थ फॉर ह्यूमैनिटी योगाथॉन (14–28 जून) के हिस्से के रूप में, यह रोटोरुआ उत्सव सभी उम्र के व्यक्तियों को योग के बारे में सीखने और इसे समग्र रूप से दैनिक अभ्यास के रूप में अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया। सत्र का नेतृत्व अनुभवी स्थानीय योग प्रशिक्षकों, नीलमणि राइट और एमी जोजवियाक ने किया, जो नियमित रूप से केंद्र में कक्षाएँ प्रदान करते हैं। प्रतिभागियों को योग की एक श्रृंखला के माध्यम से निर्देशित किया गया। शारीरिक शक्ति, आंतरिक शांति और मानसिक स्पष्टता पर ध्यान केंद्रित करते हुए आसन और साँस लेने के व्यायाम कराए गए।

कार्यक्रम का समापन सामूहिक सूर्य नमस्कार अनुक्रम के साथ हुआ जिससे उपस्थित लोग केंद्रित और पुनर्जीवित महसूस कर रहे थे। घटना पर विचार करते हुए नीलमणि राइट ने साँझा किया कि योग की भावना से एक साथ "इतने सारे लोगों को आते देखना उत्साहजनक था। इस तरह की घटनाएँ हमें याद दिलाती हैं कि योग केवल व्यायाम नहीं है, यह एक मार्ग है। अपने भीतर और अपने आस–पास की दुनियाँ के साथ सामंजस्य स्थापित करने का।''

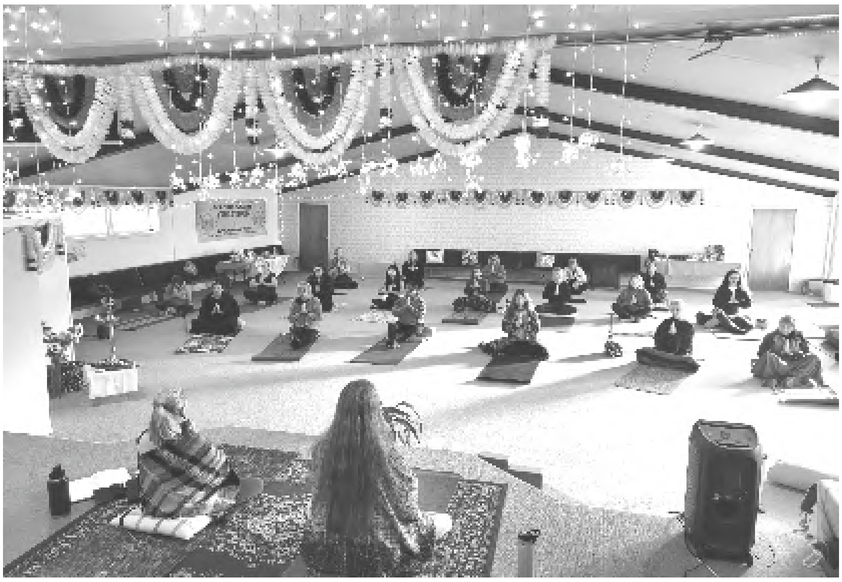

हिंदू काउंसिल ऑफ न्यूजीलैंड के अध्यक्ष डॉ. गुना मैगेसन ने उनका आभार व्यक्त किया। एक आकर्षक और ऊर्जावान सत्र के आयोजन के लिए योग शिक्षकों और सभी उपस्थित लोगों को धन्यवाद। उनकी जीवंत भागीदारी है। उन्होंने सभी को अपनी योग यात्रा को आगे भी जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया। आयोजन और इसके लाभों को अपने समुदायों के भीतर साँझा करना चाहिए।

सत्र के बाद प्रतिभागियों को मयंक गुलाटी द्वारा इंडियन पैलेट रेस्तरां से हल्का जलपान प्रदान किया गया। न्यूजीलैंड की हिंदू परिषद इसके आयोजन में योगदान देने वाले सभी लोगों को हार्दिक धन्यवाद देती है। आयोजन सफल रहा। हम आने वाले वर्षों में स्वास्थ्य, एकता और कल्याण की इस यात्रा को जारी रखने के लिए तत्पर हैं

मीडिया पूछताछ के लिए कृपया संपर्क करें :– प्रो. गुना मगेसन–अध्यक्ष, न्यूजीलैंड की हिंदू परिषद।

झुन्झुनूं में सेवा सप्ताह के अन्तर्गत वृक्षारोपण कार्यक्रम

आज विश्व हिन्दू परिषद् एवं बजरंग दल झुन्झुनूँ ने प्रांत धर्माचार्य सह सम्पर्क प्रमुख रामानंद पाठक के सान्निध्य, जिला मंत्री जयराज जांगिड़ की अध्यक्षता व बजरंग दल जिला संयोजक सुशील प्रजापति के नेतृत्व में सिद्ध श्री वीर हनुमान मन्दिर, मादियो जाव, नमन सिटी में वृक्षारोपण कर **सेवा सप्ताह** की शुरूआत की, जिसमें 1 से 7 जुलाई तक पूरे जयपुर प्रांत में **सेवा सप्ताह** का आयोजन किया जा रहा है। यह कार्य विश्व हिन्दू परिषद् के वार्षिक कार्यों में से एक है।

bajrangdaljjn@gmail.com

अखिल भारतीय सेवा बैठक-भाग्यनगर

20, 21, 22 जून 2025 ज्येष्ठ कृ. दशमी, एकादशी, द्वादशी वि.सं. 2082

ज्येष्ठ कृ. दशमी 20 जून सायंकाल 7.15 बजे अनौपचारिक सामूहिक सत्र में अखिल भारतीय सेवा प्रमुख श्री अजेय पारीक ने केन्द्रीय कार्यकर्तागण का परिचय, स्थान एवं व्यवस्थाओं का परिचय करवाते हुए सामान्य सूचनाएँ दीं। अगले दिनक्रम की जानकारी एवं वृत्त निवेदन के बिन्दुओं का संकेत किया गया। ज्येष्ठ कृ. एकादशी 21 जून 2025 को संयोग से विश्व योग दिवस का अवसर होने के कारण बैठक में आए सभी कार्यकर्ता प्रातःकाल एकात्मता स्तोत्र के पश्चात् योगाभ्यास, सूर्य नमस्कार एवं प्राणायाम करते हुए विश्व योग दिवस के वैश्विक आयोजन में सहभागी हुए। उद्घाटन सत्र प्रातः 9.30 बजे – भारत माता एवं श्रीराम दरबार के समक्ष पुष्पार्चन के पश्चात् दीप मंत्र एवं आचार पद्धति से अखिल भारतीय सेवा बैठक का शुभारम्भ हुआ।

सूत्र संचालन करते हुए भाग्यनगर क्षेत्र सेवा प्रमुख श्री बंडारी रमेश जी ने मंचस्थ पूज्य श्रीकृष्ण स्वामी जी सहित उपस्थित महानुभावों, सर्वश्री संयुक्त महामन्त्री कोटेश्वर शर्मा जी, संयुक्त महामन्त्री स्थाणु मालयन जी, सेवा विभाग मार्गदर्शक मधुकर दीक्षित जी, अखिल भारतीय सेवा प्रमुख अजेय पारीक जी, अखिल भारतीय सह सेवा प्रमुख द्वय आनन्द प्रकाश हरबोला जी एवं सपन जी मुखर्जी, तेलंगाना प्रान्त अध्यक्ष मूर्ति जी, केन्द्रीय प्रबन्ध समिति सदस्य राघवुलु जी के परिचय एवं स्वागत की प्रक्रिया सम्पन्न की।

प्रास्ताविक भाषण – अखिल भारतीय सेवा प्रमुख श्री अजेय पारीक ने कहा कि पूज्य रामानुजाचार्य जी की प्रतिमा के पावन परिसर में आयोजित इस बैठक का विशिष्ट महत्व है। सेवा कार्यकर्ता का कदम आगे ही बढ़ना चाहिए। सेवा का एक स्वभाव होता है। सेवा कार्यकर्ता का खुली आँखों से अपने आसपास के समाज जीवन के अभावों को देखकर उनके निवारण के लिए दौड़ पड़ना स्वाभाविक है। अभी कर्णावती की विमान दुर्घटना के समय वहाँ के कार्यकर्ताओं ने ऐसा उदाहरण प्रस्तुत किया है।

वर्तमान में सम्पूर्ण देश में 6399 सेवा कार्य संचालित हैं, जिनमें 943 सँस्कारशालाएँ हैं। देश के प्रत्येक जिले को सेवायुक्त करते हुए इन सेवाकार्यों में उल्लेखनीय वृद्धि करनी है। सेवा उपक्रमों को नवीन बस्तियों में प्रवेश का माध्यम बनाएँ। गुणवत्ता, विस्तार, उपलब्धि एवं समीक्षा की दृष्टि से हम इस बैठक से ऊर्जा लेकर जाएँ।

आशीर्वचन – पूज्य श्रीकृष्ण स्वामी जी महाराज ने विश्व हिन्दू परिषद के सेवा कार्यों की भूरि–भूरि प्रशंसा करते हुए, इसे समाज के लिए एक प्रेरणा एवं समाज सुधार की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास के रूप में परिभाषित किया। उन्होंने कहा कि ईश्वरीय प्रदत्त प्रेरणा से किए जा रहे सेवा कार्यों की प्रशंसा करने के लिए न तो मेरे पास शब्द हैं और न ही मैं अपने को इस योग्य समझता हूँ। हम जो भी सेवा कार्य करते हैं, उसे हमें एक ईश्वरीय कार्य की भावना से करना चाहिए एवं उस कार्य हेतु हमारी प्रेरणा अथवा प्रोत्साहन का स्रोत आध्यात्मिक प्रकृति का होना चाहिए।

उन्होंने कहा कि भारत महान, तपस्वियों, ऋषियों, मुनियों एवं सन्तों की धरती है, जिनके द्वारा समाज की सेवा हेतु अनेक पावन, पुनीत अनुष्ठान किए जाते रहे हैं। सन्त धरती पर ईश्वर का ही साक्षात् रूप है। विश्व हिन्दू परिषद सेवा विभाग भी इस ईश्वरीय कार्य को अपने कार्यकर्ताओं के परिश्रम, समर्पण एवं दृढ़ संकल्प के बल पर विस्तार दे रहा है और यह समाज को एक प्रेरणा देता है कि किस प्रकार से हमें अपने मानव जीवन

का सदुपयोग करके उसे सार्थक बनाना चाहिए ।

विमोचन – मंचस्थ महानुभावों द्वारा सेवा विभाग की वार्षिक विवरणिका 'सेवा संवर्धन–2025' का विमोचन किया गया।

मुख्य उद्‌बोधन – संयुक्त महामन्त्री श्री कोटेश्वर शर्मा जी ने कहा कि हिन्दू चिन्तन में मानव के जन्म के हेतु के अनुसन्धान में सुख एवं आनन्द प्राप्ति का उद्देश्य, किन्तु वह अकेले नहीं अपितु उसे परिवार एवं समाज के साथ सार्थक माना गया। पर्यावरण संरक्षण, आसपास के प्राणी जगत के संरक्षण को महत्वपूर्ण माना। अतः सामाजिक अनुशासन, विधि निषेध, कर्तव्य, दायित्व बोध युक्त सामाजिक व्यवस्था निर्मित की गई। अन्यों की आवश्यकता पूर्ति के लिए विचार एवं कार्य को योग्य माना गया। 18 पुराणों का सार...परोपकाराय पुण्याय पापाय परपीड़नम्। कर्म से भाग्य बदलता है, इस जन्म के कर्म अगले जन्म में प्रभाव डालते हैं। सभी मिलजुल कर आनन्द से रहें, यह समरसता है। ऊंच–नीच के भाव से इसमें कमी आती है। परोपकार ही श्रेष्ठ जीवन पद्धति है। सम्पूर्ण हिन्दू समाज में परिवार व्यवस्था से ही सेवा की प्रवृत्ति स्वाभाविक रूप से मिलती है। विश्व हिन्दू परिषद की सेवा कल्पना अन्यों से अलग है। हमारा परम लक्ष्य है, देश, धर्म, सँस्कृति की रक्षा करना। देश की स्वतन्त्रता के पश्चात् दूसरी जीवन पद्धति थोपी गई। इससे धर्मांतरण का विस्तार हुआ। सँस्कृति, धर्म का भाव क्षीण हुआ। सेवा का दुरुपयोग धर्मान्तरण के रूप में होने लगा। विश्व हिन्दू परिषद ने इसका प्रतिरोध कर धर्म, सँस्कृति, सँस्कार, धर्म रक्षा, समरस जीवन हेतु सेवा कार्यों के माध्यम से बहुत बड़े स्तर पर सेवा कार्य प्रारम्भ किए।

विश्व हिन्दू परिषद के सेवा विभाग द्वारा संचालित सेवा कार्य प्रचार प्रसार, निजी पुण्य, ख्याति के लिए नहीं, अपितु समाज में जहाँ अभाव हैं, उनकी पूर्ति के लिए किए जाते हैं। सूर्य के अस्ताचल में जाते समय छोटे से दीपक ने आगे बढ़कर कहा–"आपके समान सम्पूर्ण सृष्टि को आलोकित करने का मेरा सामर्थ्य नहीं, किन्तु प्रातःकाल आपके पुनः आने तक मैं अपने आसपास अंधकार को, आततायी शक्तियों को नहीं आने दूंगा।" हम भी सेवाकार्यों के प्रभावी संचालन के द्वारा धर्म, सँस्कृति विरोधी शक्तियों को परास्त करें।

द्वितीय सत्र अखिल भारतीय सह सेवा प्रमुख श्री आनन्द जी हरबोला द्वारा रखे गए श्रद्धांजलि प्रस्ताव में गत एक वर्ष में दिवंगत महानुभावों, पहलगाम आतंकी आक्रमण एवं कर्णावती विमान दुर्घटना में असमय मृत्यु को प्राप्त दिवंगत आत्माओं की सद्‌गति के लिए प्रार्थना की गई । भोपाल क्षेत्र सेवा प्रमुख श्री राकेश जी अग्रवाल ने अकोला में सम्पन्न गत बैठक की कार्यवाही का वाचन किया एवं सम्पूर्ण सभा ने ओम ध्वनि से उसका अनुमोदन किया। श्री कोटेश्वर जी शर्मा ने सत्संग के द्वारा सेवा तथा सेवा कार्यों के द्वारा सत्संग के संचालन के महत्व पर मार्गदर्शन करते हुए कहा कि अपने कार्य की रचना में पाँच प्रकार के सत्संग संचालित हैं – 1. विश्व हिन्दू परिषद के कार्यकर्ताओं के द्वारा सामान्य सत्संग, 2. बजरंग दल के कार्यकर्ताओं द्वारा साप्ताहिक मिलन केन्द्र, 3. दुर्गा वाहिनी की बहनों द्वारा साप्ताहिक मिलन केन्द्र, 4. मातृशक्ति की बहनों द्वारा साप्ताहिक सत्संग तथा 5. धर्म प्रसार के आयाम द्वारा सत्संग की परम्परा है।

सेवा विभाग द्वारा छात्रावास के विद्यार्थियों एवं विभिन्न सेवा कार्यों के सेवार्थियों के मध्य सत्संग संचालित किए जाएँ। (सेवा विभाग द्वारा वर्तमान में 10 प्रान्तों में 50 से अधिक तथा 6 प्रान्तों में 12 से 45 के मध्य सत्संग संचालित हैं)। सत्संग द्वारा दो प्रकार के सेवा कार्य अपेक्षित हैं– 1. समसामयिक सेवा उपक्रम एवं 2. स्थाई सेवा कार्य। परिवारों में सत्संग करना भी अपेक्षित है। सत्संग वार्षिक उत्सव के माध्यम से समाज बान्धवों के बीच सत्संग एवं सेवा कार्य का प्रत्यक्ष प्रकटीकरण किया जा सकता है। अपनी धर्म, सँस्कृति की शिक्षा को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने की परम्परा सत्संग के माध्यम से ही सम्भव है। सत्संग व्यक्ति को धर्म के प्रति आस्थावान, राष्ट्र के प्रति समर्पित, परिवार–समाज के प्रति दायित्वबोध से युक्त करता है।

केन्द्रीय प्रबन्ध समिति के सदस्य श्री राघवुलु जी ने अपने संक्षिप्त उद्‌बोधन में धर्मान्तरण के चार प्रमुख कारण बताए वे हैं – निर्धनता,

अस्वास्थ्य, अशिक्षा एवं असमानता (भेदभाव)। हम अपने समाज को जागृत कर इन अभावों को पूरा करने की दृष्टि से प्रयत्नशील होंगे, तो, धर्मान्तरण को निर्मूल कर सकेंगे। यह सामाजिक जागरण अपने सेवाकार्यों के आधार पर सुनिश्चित किया जाता है। विभिन्न सत्रों में प्रान्त सेवा प्रमुखों ने बैठक में उपस्थित कार्यकर्तागण का परिचय करवाते हुए प्रान्त के संक्षिप्त सेवावृत्त का निवेदन किया।

मध्याह्न सत्र श्री आनन्द जी हरबोला ने पुरातन छात्र कार्यक्रमों की पूछताछ करते हुए पुरातन छात्र परिषद के गठन एवं प्रतिवर्ष यह कार्यक्रम किए जाएँ, इसका आग्रह किया। प्रत्येक सेवा स्थान पर वार्षिक उत्सव की परम्परा का पालन करने तथा प्रान्त सेवा टोली सहित जिला सेवा प्रमुखों के लिए दो दिवसीय प्रान्त सेवा अभ्यास वर्ग आवश्यक रूप से आयोजित किए जाने पर बल दिया।

श्री सपन जी मुखर्जी ने प्रत्येक जिले को सेवा कार्य युक्त करने के अपने संकल्प का स्मरण करवाते हुए आवाहन किया कि संघ–शताब्दी के इस वर्ष में हमें निश्चयपूर्वक प्रत्येक जिले को सेवायुक्त करना है। प्रान्त सेवाकार्यों को प्रदर्शित करने वाला एक संक्षिप्त प्रान्त सेवा पत्रक प्रतिवर्ष प्रकाशित करने की योजना का भी उन्होंने आग्रह किया।

सायंकालीन सत्र श्री मधुकर दीक्षित जी ने आगामी नवम्बर 25 से जनवरी 26 के मध्य प्रान्तशः सेवा कुम्भ आयोजित करने के सन्दर्भ में विस्तार से मार्गदर्शन किया तथा फरवरी 2026 में गोवा में आयोजित अखिल भारतीय अर्भकालय परिषद की कल्पना सामने रखी एवं उस दृष्टि से करणीय कार्यों का संकेत किया। इस सत्र के अन्त में श्री अजेय पारीक ने सभी क्षेत्र सेवा प्रमुखों एवं निमन्त्रित महानुभावों का परिचय करवाया। रात्रिकालीन कार्यक्रम में भाग्यनगर में संचालित दो सेवा प्रकल्पों, कारुण्य सिन्धु एवं कारुण्य भारती के बालक वृन्द ने रंगमञ्चीय प्रस्तुतिकरण में दशावतार का मञ्चन किया, जिसकी सभी ने मुक्तकण्ठ से सराहना की।

ज्येष्ठ कृ. द्वादशी 22 जून को प्रथम सत्र में श्री अजेय पारीक ने विमर्श विषय के सन्दर्भ में करणीय बिन्दुओं की चर्चा करते हुए सूचित किया कि–सेवा क्षेत्र के सम्पर्कित विभिन्न समाजबान्धवों यथा–दानदाता, छात्रावासों एवं विद्यालयों में अध्ययनरत बालकों के अभिभावक, सँस्कारशालाओं की आचार्या–वर्ग एवं बालकों के परिजन एवं विभिन्न सेवाकार्यों के सेवार्थी वर्ग आदि के समूह बनाने के लिए इन्हें सूचीबद्ध किया जाए। सेवा संवर्धन पत्रिका के सदुपयोग, सामग्री प्रेषण के समय अपेक्षित बिन्दुओं के समावेश के साथ अच्छे फोटोग्राफ भेजे जाएँ।

सँस्कारशालाओं के संचालन के विषय में मूलभूत बिन्दुओं, यथा–टोली, 100 घरों की बस्ती पर एक आचार्या का चयन, न्यूनतम 10 आचार्याओं का तीन दिवसीय प्राथमिक प्रशिक्षण, अवलोकन, मासिक दक्षता वर्ग आदि का स्मरण करवाया जाए। कुछ अन्य महत्वपूर्ण करणीय कार्यों के स्मरण के रूप में जिनका उल्लेख किया गया वे हैं – सुपोषण, मजदूरों के बच्चे, गली के बच्चे (Street Children) तथा ग्राम प्रेरक / बस्ती प्रेरक। क्षेत्रशः बैठकों के सत्र में आगामी अक्टूबर माह तक प्रान्त कार्यकर्ताओं द्वारा सभी जिलों में प्रवास योजना, संगठन के प्रान्त कार्यकर्ताओं के साथ प्रान्त सेवा टोली की विस्तृत बैठक, सेवा कुम्भ, विमर्श के करणीय बिन्दु तथा प्रान्त सेवा अभ्यास वर्ग आदि विषयों पर चर्चा की गई।

समापन सत्र में उद्‌बोधन करते हुए श्री सपन जी मुखर्जी ने कहा कि इस बैठक में विविध सत्रों में सेवाकार्यों के अनेक पक्षों पर चर्चा हुई है। इस सनातन भूमि में एक भी क्रिश्चियन, मुस्लिम नहीं था, किन्तु आज स्थिति बहुत भिन्न है। बार–बार देश विभाजन हुआ है। अब न केवल धर्मान्तरण को रोकना है, अपितु घर वापसी पर भी जोर देना है। समाज के सभी अंगों को सशक्त बनाकर राष्ट्र को परम वैभव की ओर ले जाने के लिए सेवा सबसे महत्वपूर्ण कार्य है। इसको आधार बनाकर सभी अंगों के साथ समानता का व्यवहार कर राष्ट्र को सबल बनाना है। हमारी सँस्कारशालाएँ नगर, महानगर की सेवा बस्ती, वंचित वर्ग के बीच चलती हैं। अभी हमारी पहुँच को और अधिक विस्तारित करना है। धर्मान्तरण को रोकने की दृष्टि से सँस्कारशालाओं की बहुत बड़ी भूमिका है। हम विगत 59–60 वर्षों में 451 जिलों तक ही पहुँचे हैं। अपने प्रान्त के प्रत्येक जिले में न्यूनतम एक छोटा सेवा कार्य प्रारम्भ हो। संघ शताब्दी में सभी प्रान्तों के 100 प्रतिशत जिले सेवा कार्य युक्त हों, यह संकल्प लें। एक संकल्प के रूप में लक्ष्य प्राप्ति करेंगे। परोपकार हिन्दू के रक्त में है। यही धर्म है, यही संस्कार है।

पूर्णता मन्त्र, पुष्पांजलि मन्त्र तथा जयघोष के साथ अखिल भारतीय सेवा बैठक का यह भाग सम्पन्न हुआ। दूसरे भाग में मध्याह्न 3.30 से अपराह्न 5.30 के मध्य देशभर से आए कार्यकर्ताओं ने भाग्यनगर में संचालित दोनों सेवा प्रकल्पों का अवलोकन किया। एक सुव्यवस्थित बहुआयामी प्रकल्प संचालन, समिति पदाधिकारीगण की सक्रियता एवं अध्ययनरत बालकों की विनयशीलता, सेवा भाव तथा सँस्कारित व्यवहार की अनुभूति एवं प्रेरक दिशा लेकर सभी ने अपने कार्यक्षेत्र को प्रस्थान किया। केन्द्रीय टोली के 13 तथा प्रांत सेवा प्रमुख के 100 कार्यकर्ताओं सहित 113 महानुभावों का बैठक में सहभाग रहा।

sewa76@gmail.com

हिंदुत्व के प्रभाव से भारत नवोत्थान की ओर, अब धर्मांतरण पर पूर्ण विराम व मंदिरों को सरकारी नियंत्रण से मुक्ति की ओर समाज : विहिप

कानपुर, 28 जून, 2025। विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय संयुक्त महामंत्री डॉ. सुरेंद्र जैन ने कहा कि हिंदुत्व की बढ़ती लहर के कारण आज सम्पूर्ण देश नवोत्थान की ओर अग्रसर है। राष्ट्र जीवन का हर क्षेत्र प्रगति के पथ पर है और वैश्विक जगत भी अब भारत को एक आशा की किरण के रूप में देख रहा है। अब हम समाज को अवैध धर्मांतरण के कलंक से मुक्ति तथा हिंदू मंदिरों को सरकारी नियंत्रण से बाहर करके रहेंगे। धर्मांतरणकारी ईसाई मिशनरियों और इस्लामिक जिहादी तत्वों को भी अब समझना होगा कि उनके कुत्सित षडयंत्र अब सफल नहीं हो पाएंगे।

उत्तर प्रदेश के कानपुर में एक पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि अयोध्या में रामलला के भव्य मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा ने सम्पूर्ण विश्व में एक नवीन चेतना व ऊर्जा का संचार किया है। जिहादी आतंकवाद व नक्सलवाद पर नकेल तथा देश के शत्रुओं को स्वदेशी तकनीकी से करारे जबाव ने प्रत्येक भारतीय को अपनी कर्मठ सरकार व सशक्त नेतृत्व के प्रति गौरवान्वित किया है।

'धर्मांतरण पर लगे पूर्ण विराम' – उन्होंने कहा कि देश के दर्जनभर राज्यों में धर्मांतरण के विरुद्ध कठोर कानून व उसके कड़ाई से पालन करने वाली सरकारों के बावजूद चर्च और जिहादी तत्व लगातार भोले–भाले हिंदू समाज को, छल या बल पूर्वक धर्मांतरित करने से बाज नहीं आ रहे हैं। साथ ही मस्जिदों व मदरसों में बढ़ती बच्चों के साथ व्यभिचार व अलगाववाद की घटनाएँ भी किसी कलंक से कम नहीं हैं। अब लव जिहाद समेत इस प्रकार की सभी घटनाओं पर उन्हें पूर्ण विराम लगाना ही होगा, अन्यथा सरकार ही नहीं समाज भी इनसे निपटना अच्छी तरह जानता है। इन मामलों में चर्च व मुस्लिम संगठनों को भी आत्म चिंतन की आवश्यकता है।

'मंदिर मुक्ति अभियान' – डॉ. जैन ने कहा कि मंदिरों पर सरकारी नियंत्रण हिंदू समाज के साथ एक धोखा है। मंदिरों की संपत्ति व प्रबंधन पर कुठाराघात हो, या, आंध्र प्रदेश में तिरुपति मंदिर के प्रसाद की बात हो, या फिर अभी हाल ही में बंगाल सरकार द्वारा दीघा के जगन्नाथ धाम के प्रसाद की ठेकेदारी हलाल व्यापारियों को देने की बात हो, ऐसी अनेक घटनाओं से स्वतः सिद्ध होता है कि सेक्युलर सरकारें हिंदू आस्थाओं का सम्मान नहीं कर सकतीं।

इसलिए 5 जनवरी को आंध्र प्रदेश के विजयवाड़ा से प्रारंभ हुए मंदिर मुक्ति के अभियान को अब हम जन–जन का अभियान बना कर अपने धर्मस्थलों को स्वाधीन कर हिंदू समाज को सौंपेंगे। सभी राज्य सरकारों को अविलंब इस बारे में आगे आना चाहिए।

'कांवड़ यात्रा' – सदियों से चली आ रही हमारी कांवड़ यात्रा राष्ट्रभक्ति, राष्ट्रीय एकता, एकात्मकता, समरसता व पर्यावरण संरक्षण की प्रतीक रही है। भगवान् भोले की भक्ति में सराबोर हिंदू, जब देवी स्वरूपा, पवित्र नदियों का जल भरकर, जमीन पर रखे बिना, सात्विक भाव से, अनथक सैकड़ों किलोमीटर की यात्रा पूर्ण कर जब शिवालय पहुँचता है, तो, वह जल समरस समाज व राष्ट्रीय एकात्मता का अमृत बन जाता है। इस पूरे मार्ग में जाति, भाषा, भूषा, प्रांत, क्षेत्र इत्यादि के सभी भेद निर्मूल होकर, इन करोड़ों लोगों की एक ही पहचान होती है कि वे हिंदू हैं और भोले बाबा के भक्त हैं।

एक ओर सम्पूर्ण हिंदू समाज, ऐसी कठिन व साधना पूर्ण यात्रा करने वाले कांवड़ियों के लिए मार्ग में पलक पांवड़े बिछा कर सेवा करता है, तो, वहीं कुछ इस्लामिक जिहादी तत्व अपनी हलाली मानसिकता से बाज नहीं आते। अपनी पहचान छुपा कर, थूक जिहाद व मूत्र जिहाद जैसे षड्यंत्रपूर्वक आघातों को हिंदू समाज अब और बर्दाश्त नहीं करेगा। मुस्लिम संगठनों को इस संदर्भ में आगे आ कर, ऐसे सभी लोगों पर लगाम लगानी चाहिए।

हमें आशा है कि इस संबंध में सरकार द्वारा बनाए गए दिशा निर्देशों का सभी संबंधित पक्षकार कड़ाई से पालन कर किसी भी प्रकार का विवाद खड़ा नहीं होने देंगे।

MPIDC
MP INDUSTRIAL DEVELOPMENT CORPORATION LTD.

मध्यप्रदेश में उद्योग और समृद्धि का नया युग

इन्वेस्ट मध्यप्रदेश
अनंत संभावनाएं

ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट-2025

₹30.77 लाख करोड़ के रिकॉर्ड निवेश प्रस्ताव

21.40 लाख नये रोज़गार

25000+	60+ देश	9	300+	600+	5000+	500+
रजिस्ट्रेशन	100+ प्रतिनिधि	पार्टनर देश	कम्पनियां	बीटूजी मीटिंग	बीटूबी मीटिंग	प्रवासियों की भागीदारी

प्रदेश की क्षमताओं में निवेशकों के विश्वास
के लिए हृदय से आभार...

RO NO. - D16044/25

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6
email:hinduvishwa@gmail.com
website: www.vhp.org

Postal Regd. No. DL-SW-01/4031/24-26
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516 / 98
प्रकाशन तिथि : 13.07.2025
प्रेषण तिथि : 14-15 (अग्रिम-पाक्षिक)

RO NO. - D16044/25

प्रकाशक व मुद्रक हरिशंकर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'रॉयल प्रेस' बी–82, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेस–1, नई दिल्ली–110020 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर–6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली–22 से प्रकाशित। सम्पादक : विजय शंकर तिवारी